



राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम

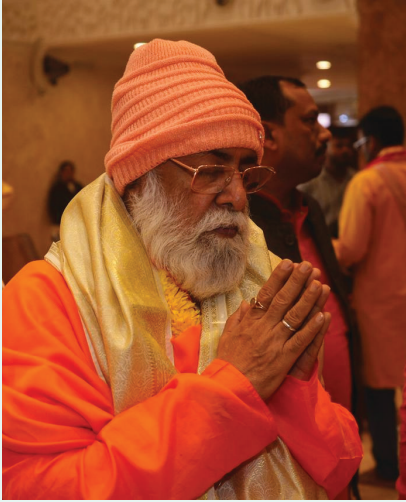
# भारत श्री

राष्ट्रीय हिंदी साप्ताहिक



सोमवार, 17 नवंबर 2025 • वर्ष 7 • अंक 18 • मूल्य: 5 रुपये

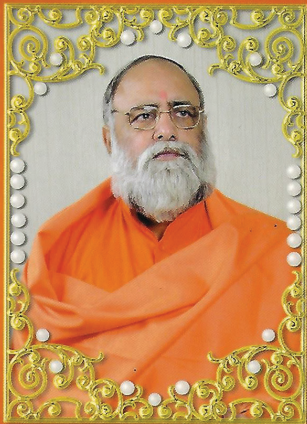
सर्दी और प्रदूषण दोनों ने बढ़ाई मुश्किलें



जगद्गुरु के शामिल होने से  
पदयात्रा को मिली आध्यात्मिक  
ऊँचाई

पृष्ठ-10-11

जगद्गुरु वाणी



विश्व भर में होने वाले प्रभु कृपा दुख निवारण  
समागम केवल प्रभु की कृपा से संभव होते हैं।  
इसका आयोजन कोई व्यक्ति नहीं करता।

परमात्मा की नजर में सभी भाई-बहन बराबर  
हैं। परमात्मा जाति, धर्म, देश, सम्प्रदाय से पार  
है। हमें सभी भाई-बहनों को समान दृष्टि से  
देखना चाहिए।

दिव्य पाठ प्रभु कृपा का वह आलोक है जिसे  
करने के लिए किसी भी प्रकार की कठिन  
तपस्या या साधना की कोई जरूरत नहीं है। यह  
बड़ा सहज और सरल है।

## वृंदावन में दो संतों का दिव्य संगम

### जगद्गुरु महाब्रह्मर्षि कुमार स्वामी जी और प्रेमानंद महाराज की भावपूर्ण मुलाकात

@ भारतश्री ब्यूरो

वृंदावन ने गुरुवार को एक ऐसा आध्यात्मिक क्षण  
देखा, जिसकी चर्चा लंबे समय तक होती रहेगी।  
जगद्गुरु महाब्रह्मर्षि श्री कुमार स्वामी जी ने  
यहां प्रतिष्ठित संत प्रेमानंद जी महाराज से भेंट की।  
यह मुलाकात न केवल सौहार्दपूर्ण रही, बल्कि इसकी  
आध्यात्मिक गहराई ने उपस्थित श्रद्धालुओं को गहरे तक  
प्रभावित किया। दोनों संतों की यह भेंट श्रीधाम वृंदावन  
की आनंदमयी वातावरण के बीच संपन्न हुई। मिलन के  
दौरान प्रेमानंद जी महाराज ने जगद्गुरु कुमार स्वामी जी  
द्वारा ब्रजभूमि में किए जा रहे कार्यों की विशेष सराहना की।



#### 108 एकड़ में बनने वाले भव्य राधा-कृष्ण स्वर्ण मंदिर की खुलकर प्रशंसा

मुलाकात में प्रेमानंद जी महाराज ने वृंदावन में 108  
एकड़ में बन रहे राधा-कृष्ण मंदिर को विराट आध्यात्मिक  
धरोहर बताया। उन्होंने कहा, "संतों में अपार सामर्थ्य होती  
है। क्योंकि वो भगवान में अपने चित्त को जोड़े होते हैं।  
मंत्रों में और संतों में बहुत ऊर्जा होती है। मंत्र भी संतों  
के अधीन हैं। इसलिए हर जगह संतों की महिमा गाई गई  
है। क्योंकि मंत्रों में वो दम है जो देवताओं को भी अपने  
अधीन कर लें। और सभी मंत्र संतों के अधीन हैं। स्वर्ण  
का मंदिर और बड़े बड़े कार्य संत लोग ही कर सकते हैं,  
सबके सामर्थ्य की बात नहीं है। क्योंकि इतना विशाल  
और दिव्य मंदिर केवल भक्ति से नहीं, बल्कि उस संत के  
हृदय से निकलता है, जिसके मन में सनातन मूल्यों के  
लिए असाधारण समर्पण हो। ये काम  
सिर्फ संत ही कर सकते हैं।

#### आध्यात्मिक एकता का संदेश

इस मुलाकात ने वृंदावन में संत  
परंपरा की एकता का संदेश और  
मजबूत किया। श्रद्धालुओं का मानना  
है कि प्रेमानंद महाराज और जगद्गुरु  
श्री कुमार स्वामी जी का एक साथ  
मिलना केवल परंपरा का सम्मान नहीं,  
बल्कि सनातन धर्म की एकजुटता की  
जीवंत मिसाल है।

स्थान पर मौजूद कई संतों ने इसे ब्रजधाम के लिए  
शुभ संकेत और आध्यात्मिक ऊर्जा का संगम बताया।

#### बीज मंत्र की सराहना

मुलाकात के दौरान प्रेमानंद जी महाराज के सामने विशेष रूप से  
जगद्गुरु श्री कुमार स्वामी जी की बीज मंत्र साधना का उल्लेख किया  
गया। उन्होंने कहा कि संतों में असीम आध्यात्मिक शक्ति होती है।  
काशी विद्वत् परिषद् के प्रवक्ता दिनेश गर्ग जी ने बताया कि श्री कुमार  
स्वामी जी बीज मंत्रों के माध्यम से लाखों-करोड़ों लोगों की तकलीफ,  
पीड़ा और मानसिक बोझ दूर कर रहे हैं।

#### श्रद्धालुओं में उत्साह

मिलन की वीडियो को बड़ी संख्या में श्रद्धालु देख रहे  
हैं। लाखों लोगों में विशेष उत्साह देखा जा रहा है। लोगों  
ने दोनों संतों को एक साथ देखने को अद्वितीय अवसर

बताया। कई भक्तों ने कहा कि इस मुलाकात से  
समूचे वृंदावन में एक नई ऊर्जा और प्रसन्नता  
आई है।

#### यमुना सफाई के पक्षधर हैं दोनों संत

ज्ञात हो कि जगद्गुरु कुमार स्वामी जी लंबे  
समय से ब्रज क्षेत्र के संरक्षण, यमुना सफाई के  
पक्षधर रहे हैं। प्रेमानंद जी महाराज ने भी इन  
विषयों पर समय समय पर संदेश देते रहते हैं।  
लोगों का कहना है कि दोनों संतों की दिशा आने  
वाले समय में ब्रजभूमि के लिए महत्वपूर्ण सिद्ध  
हो सकती है। कुल मिलाकर वृंदावन में हुआ यह भावपूर्ण  
मिलन केवल एक औपचारिक भेंट नहीं, बल्कि सनातन  
धर्म की परंपरा और आध्यात्मिक भावना का बहुत बड़ा  
उत्सव माना जा रहा है।





ORDER ALL TYPES OF :



- POOJA SAMAGRI,
- AYURVEDIC MEDICINE
- AND PRATIMA.



NOW GET AT YOUR HOME ON  
**MNDIVINE.COM**



ORDER NOW



<https://mndivine.com/>

HELPLINE : 9667793986  
( 10AM TO 6PM, MON-SAT )



# नवंबर में 3 साल का रिकॉर्ड टूटा सर्दी और प्रदूषण दोनों ने बढ़ाई मुश्किलें



@ मनीष पांडेय

**दि**ल्ली एनसीआर में ठंड ने इस बार समय से पहले दस्तक दे दी है। नवंबर की शुरुआत में ही तापमान ने ऐसा गिरावट दिखाई कि तीन साल का रिकॉर्ड टूट गया। राजधानी में शनिवार को न्यूनतम तापमान 8.7 डिग्री सेल्सियस दर्ज हुआ, जो सामान्य से 3.6 डिग्री कम था। यह तापमान शिमला के करीब पहुंच गया, जहां पारा लगभग 8.5 डिग्री पर ठहरा। भारतीय मौसम विभाग ने पुष्टि की कि 17 नवंबर की यह सर्दी पिछले तीन वर्षों में नवंबर माह का सबसे ठंडा दिन साबित हुई। इससे पहले नवंबर में सबसे कम तापमान तीन साल पहले 29 नवंबर को 7.3 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया था। इस बार ठंड ने अपनी रफ्तार पहले ही पकड़ ली है।

## एनसीआर में गिरता पारा, बढ़ती ठिठुरन

दिल्ली के साथ नोएडा, गाजियाबाद और गुरुग्राम में भी सर्दी ने आम लोगों को प्रभावित करना शुरू कर दिया है। मौसम विभाग का कहना है कि 2023 में नवंबर का सबसे कम तापमान 9.2 डिग्री और 2024 में 9.5 डिग्री रहा था।

इस साल तापमान का 8 डिग्री से नीचे पहुंचना दर्शाता है कि ठंड का असर सामान्य से अधिक है। आज कल सुबह की नमी का स्तर 92 प्रतिशत तक पहुंच चुका है, जिससे कोहरा और सर्दी दोनों बढ़ने की आशंका है। दिन का अधिकतम तापमान 26 डिग्री के आसपास रहने की उम्मीद है।



## दिल्ली के प्रमुख इलाकों

### का एक्वआई

- ▶ जहांगीरपुरी: 419
- ▶ वजीरपुर: 410
- ▶ बदायूँ: 419
- ▶ आनंद विहार: 382
- ▶ अशोक विहार: 381
- ▶ पंजाबी बाग: 371
- ▶ रोहिणी: 384
- ▶ विवेक विहार: 396

दूसरी तरफ प्रदूषण का स्तर भी लगातार खतरनाक श्रेणी में बना हुआ है। ग्रेप-3 लागू होने के बावजूद हालात सुधर नहीं रहे हैं। स्कूलों में छुट्टियां और कई दफ्तरों में वर्क फ्रॉम होम लागू किया गया, लेकिन दिल्ली की हवा अब भी सांस लेना मुश्किल कर रही है। दिल्ली का औसत एयर क्वालिटी इंडेक्स लगातार 400 के करीब बना हुआ है, जो 'गंभीर' श्रेणी में आता है। ठंड बढ़ने के साथ-साथ हवा की गति धीमी हो जाती है, जिससे प्रदूषक ऊपर उठने के बजाय जमीन के करीब ही जमा हो जाते हैं।

## ठंड और प्रदूषण दोनों से राहत की उम्मीद कम

दिल्ली में फिलहाल ठंड कम होने की संभावना नहीं है। दिन का तापमान चाहे थोड़ा स्थिर रहे, लेकिन रात और सुबह के तापमान में लगातार गिरावट जारी रहेगी। बारिश होगी तो प्रदूषण कुछ हद तक कम हो सकता है, लेकिन उससे ठंड कहीं ज्यादा बढ़ जाएगी। मौसम विशेषज्ञों के अनुसार नवंबर के बाकी दिनों में भी सर्दी सामान्य से ऊपर रहने की आशंका है। प्रदूषण नियंत्रण के लिए लगाए गए उपायों का असर भी फिलहाल सीमित दिखाई दे रहा है।

दिल्ली एनसीआर इस समय दोहरे संकट से जूझ रहा है। रिकॉर्डतोड़ सर्दी और खतरनाक स्तर का प्रदूषण। जहां तापमान का गिरना प्राकृतिक प्रक्रिया है, वहीं प्रदूषण इंसानी लापरवाही का नतीजा है। आने वाले दिनों में पारा और नीचे जा सकता है। ऐसे में लोगों को सर्दी से बचाव, प्रदूषण से सावधानी और स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखना होगा।

## बारिश के बाद और बढ़ेगी ठंड

मौसम विभाग ने अगले कुछ दिनों में हल्की बारिश की संभावना जताई है। बारिश पड़ते ही पारा और लुढ़केगा। राजधानी में सुबह की ठंड और भी कड़वी हो सकती है। कई राज्यों में पहले से ही न्यूनतम तापमान सामान्य से काफी नीचे जा चुका है।

18 और 19 नवंबर को मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश के पश्चिमी हिस्से और हरियाणा के ग्रामीण क्षेत्रों में शीत लहर और घना कोहरा बढ़ने की आशंका है। उत्तरी भारत की

ओर ठंडी हवाओं का फैलाव तेज हो चुका है। दिल्ली और आसपास के क्षेत्रों में सुबह-सुबह हल्का कोहरा दिखने लगा है। जैसे-जैसे तापमान और नीचे जाएगा, दृश्यता प्रभावित होने की संभावना भी बढ़ेगी। ग्रामीण इलाकों में कोहरा और पहले घना हो सकता है, जिससे सड़क हादसों की आशंका भी बढ़ जाती है।

## सर्दी के साथ प्रदूषण का डबल अटैक

जहां एक तरफ सर्दी इतनी जल्दी बढ़ गई है, वहीं



# मथुरा की धरती पर एकता का संदेश

## सनातन पदयात्रा ने बांधे हिंदू भाईचारे के सूत्र

**म**थुरा की पावन भूमि पर आज एक ऐसी लहर उठी है जो सदियों पुरानी एकता की याद दिलाती है। दिल्ली से शुरू हुई सनातन हिंदू एकता पदयात्रा, जो बागेश्वर धाम के पीठाधीश्वर पंडित धीरेन्द्र कृष्ण शास्त्री के नेतृत्व में चल रही है, 13 नवंबर 2025 को मथुरा पहुंच गई। यह यात्रा अपने सातवें-आठवें दिन ब्रज की सरजमीं पर कदम रखते ही भक्तों के सैलाब में डूब गई। कोटवन सीमा पर हजारों श्रद्धालुओं ने शंख की ध्वनि और फूलों की वर्षा से स्वागत किया। 11 तोपों की सलामी और 21 कुंतल फूलों का इस्तेमाल इस स्वागत को यादगार बना गया। पदयात्रा का यह पड़ाव कुल 150 से 170 किलोमीटर लंबी यात्रा का महत्वपूर्ण हिस्सा है, जो 7 नवंबर से शुरू होकर 16 नवंबर तक चलेगी। मथुरा-वृंदावन में चार दिनों का ठहराव रखा गया है, जहां विभिन्न कार्यक्रमों के जरिए सनातन मूल्यों को मजबूत करने का प्रयास हो रहा है।

इस यात्रा में शामिल लोग न सिर्फ भक्ति के स्वर गा रहे हैं, बल्कि समाज में व्याप्त जाति-जाति के भेदभाव को मिटाने की कोशिश कर रहे हैं। धीरेन्द्र शास्त्री जी ने कहा, “यह यात्रा हिंदुओं को एकजुट करने के लिए है, ताकि हम सब भाई-भाई बनकर रहें।” यात्रा के दौरान कोसीकलां जैसे इलाकों में रात्रि सभाओं का आयोजन हो रहा है, जहां प्रवचन और भजन-कीर्तन से माहौल भक्तिमय हो जाता है। लेकिन यह सिर्फ धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि एक सामाजिक संदेश भी है जो युवाओं को अपनी जड़ों से जोड़ रहा है। कई लोग इसे अयोध्या राम मंदिर के बाद मथुरा-कृष्ण जन्मभूमि विवाद के संदर्भ में देख रहे हैं, लेकिन यात्रा के आयोजक स्पष्ट करते हैं कि यह शांति और समरसता का प्रतीक है। यात्रा में महिलाओं और बच्चों की बड़ी संख्या दिखी, जो घर-घर से निकलकर सड़कों पर उतर आए। ट्रैफिक डायवर्जन और सुरक्षा इंतजामों के बावजूद भारी भीड़ ने प्रशासन को चुनौती दी।

कई पुरानी वीडियो वायरल हो रही हैं जो इस यात्रा से जोड़कर फैलाई जा रही हैं, लेकिन सच्चाई यह है कि असली दृश्य मथुरा की सड़कों पर उमड़ें सैकड़ों हजारों लोगों के हैं। यह पदयात्रा न सिर्फ हिंदू समाज को एक सूत्र में बांध रही है, बल्कि यह सोचने पर मजबूर कर रही है कि क्या हमारी एकता वाकई मजबूत है या फिर बाहरी चुनौतियां हमें बांटने की कोशिश कर रही हैं। यात्रा के इस चरण में धीरेन्द्र जी की तबीयत खराब होने की खबरें भी आईं—बुखार और चक्कर आने के बावजूद उन्होंने रुकने से इनकार कर दिया। यह उनकी निष्ठा का प्रतीक है। कुल मिलाकर, मथुरा पहुंचना इस यात्रा का टर्निंग पॉइंट साबित हो रहा है, जो न सिर्फ स्थानीय स्तर पर उत्साह भर रहा है, बल्कि पूरे देश में सनातन भावना को जागृत कर रहा है। आगे के दिनों में वृंदावन तक यह लहर और तेज होगी, और शायद यह एक नई शुरुआत का संकेत दे।

**जाति भेद मिटाओ, भाईचारा जोड़ो: पदयात्रा का मूल मकसद**

सनातन हिंदू एकता पदयात्रा का सबसे बड़ा उद्देश्य समाज में फैले जाति के जाल को तोड़ना है। धीरेन्द्र शास्त्री



जी बार-बार दोहराते हैं, “जात-पात की करो विदाई, हम सब हिंदू भाई-भाई।” यह नारा यात्रा का मूल मंत्र बन चुका है, जो लोगों को सोचने पर मजबूर करता है कि हमारी प्राचीन संस्कृति में तो सब एक थे, फिर आज ये बंटवारे क्यों। यात्रा दिल्ली से वृंदावन तक फैली है, जो न सिर्फ भौगोलिक दूरी तय कर रही है, बल्कि दिलों की दूरी भी मिटा रही है। इसका मकसद सनातन धर्म की एकता को मजबूत करना, विश्व शांति का संदेश फैलाना और युवा पीढ़ी को अपनी धरोहर से जोड़ना है।

पदयात्रा में हर कदम पर भगवा झंडे लहरा रहे हैं, जो हिंदुत्व की शक्ति का प्रतीक हैं। आयोजकों के मुताबिक, यह यात्रा बागेश्वर धाम के सेवा प्रकल्पों को भी बढ़ावा दे रही है, जहां गरीबों की मदद और धार्मिक जागरूकता पर जोर है। लेकिन क्या यह सिर्फ नारे हैं या वाकई बदलाव लाएंगी? कई लोग कहते हैं कि ऐसी यात्राएं समाज को एकजुट तो करती हैं, लेकिन लंबे समय तक असर डालने के लिए शिक्षा और जागरूकता अभियान जरूरी हैं। यात्रा के दौरान प्रवचनों में शास्त्री जी ने कहा कि सनातन धर्म किसी के खिलाफ नहीं, बल्कि सबको जोड़ने का रास्ता है। यह संदेश खासकर उन इलाकों में गूंज रहा है जहां जातिगत तनाव आम है।

इसके अलावा, यात्रा पर्यावरण और सामाजिक सद्भाव पर भी फोकस कर रही है। रास्ते में पेड़ लगाने और स्वच्छता अभियान चलाए जा रहे हैं, जो दिखाते हैं कि धार्मिकता सिर्फ मंदिरों तक सीमित नहीं। लेकिन चुनौतियां भी हैं—कुछ आलोचक इसे राजनीतिक रंग देने की कोशिश बता रहे हैं, जबकि आयोजक इसे शुद्ध आध्यात्मिक प्रयास कहते हैं। कुल मिलाकर, यह यात्रा एक विचार है जो पूछता है: क्या हम अपनी एकता को मजबूत कर पाएंगे? अगर हां, तो यह बदलाव की शुरुआत होगी। वृंदावन पहुंचने तक यह संदेश और स्पष्ट हो जाएगा।

**भक्तों से भरा कारवां: यात्रा में शामिल हुए ये बड़े नाम**

इस पदयात्रा में सिर्फ आम भक्त ही नहीं, बल्कि कई बड़े नेता और समाजसेवी भी शामिल हो गए हैं, जो इसे एक व्यापक आंदोलन का रूप दे रहे हैं। राजस्थान के शिक्षा मंत्री मदन दिलावर ने कोसीकलां पहुंचकर धीरेन्द्र शास्त्री जी का आशीर्वाद लिया और कहा, “यह यात्रा सनातन संस्कृति की रक्षा का संकल्प है।” इसी तरह, भोपाल के सांसद अलोक शर्मा ने मथुरा में सहभागिता की और भक्तों को संबोधित किया। कुंवर रघुराज प्रताप सिंह, जिन्हें राजा भइया कहा जाता है, उनके भाई अक्षय प्रताप सिंह और शिवराज प्रताप सिंह भी यात्रा में दिखे, जो उत्तर प्रदेश की राजनीति में उनका प्रभाव दिखाता है।

कवि कुमार विश्वास की मौजूदगी ने इसे साहित्यिक रंग दे दिया। उन्होंने मंच से कहा, “समय अनुकूल है, तीन साल और संघर्ष कर लो, तो मथुरा में भी अयोध्या जैसा उत्सव होगा।” यह बयान भक्तों में जोश भर गया। यात्रा में महिलाएं, बच्चे और बुजुर्ग—सब शामिल हैं। हजारों की संख्या में लोग पैदल चल रहे हैं, जो दिखाता है कि यह जन आंदोलन है। लेकिन सभी को शामिल करने का मतलब यह भी है कि विविधता बरकरार रहे। कुछ लोग इसे राजनीतिक दलों का समर्थन बता रहे हैं, जबकि कई इसे शुद्ध धार्मिक प्रयास मानते हैं।

ट्रेनिंग और तैयारी के बावजूद, यात्रा में स्वास्थ्य संबंधी मुद्दे भी उठे। धीरेन्द्र जी को यूपी-हरियाणा बॉर्डर पर चक्कर आ गए, लेकिन भक्तों ने उन्हें संभाला और यात्रा जारी रही। यह दृश्य भावुक कर गया। कुल मिलाकर, ये लोग न सिर्फ शारीरिक रूप से जुड़े, बल्कि भावनात्मक रूप से भी। क्या यह एकता राजनीति से ऊपर उठेगी? यह सवाल यात्रा को और गहरा बनाता है। आगे वृंदावन में और लोग जुड़ने की उम्मीद है।

**यात्रा की झलकियां: वो बातें जो छू गईं दिल को**

पदयात्रा के दौरान कई ऐसी घटनाएं घटीं जो लोगों के दिलों को छू गईं। मथुरा पहुंचते ही कोटवन में भव्य स्वागत हुआ, जहां फूलों की होली खेली गई। लेकिन सबसे यादगार रहा धीरेन्द्र शास्त्री जी का संदेश—“हिंदू एकता ही हमारी ताकत है।” रात्रि सभाओं में उनके प्रवचन ने हजारों को रोया-हंसाया। एक तरफ बुखार के बावजूद उनकी हिम्मत, दूसरी तरफ भक्तों का प्यार—यह सब मिलकर एक तस्वीर बना गया। यात्रा में भजन-कीर्तन की धुनें गूंजीं, जो रास्ते भर सनातन गौरव की कहानी सुना रही थीं।

कई जगहों पर स्थानीय लोगों ने लंगर लगाए, जो दिखाता है कि यह यात्रा सिर्फ गुजरने वाली नहीं, बल्कि जोड़ने वाली है। लेकिन एक तरफ उत्साह, दूसरी तरफ सावधानियां भी जरूरी रहीं। पुरानी वीडियो के वायरल होने से भ्रम फैला, लेकिन फैक्ट चेक ने सच्चाई साफ की। यात्रा ने सवाल उठाया कि सोशल मीडिया पर सत्य कैसे पहचानें। प्रमुख बात यह है कि यह यात्रा शांति का प्रतीक बनी। कोई हिंसा नहीं, सिर्फ प्रेम। शास्त्री जी ने कहा, “हम विरोध नहीं, समर्थन चाहते हैं।”

इसके अलावा, पर्यावरण संरक्षण पर जोर दिया गया—रास्ते में कचरा न फैलाने की अपील। युवाओं को संबोधित करते हुए कहा गया कि सनातन को आधुनिकता से जोड़ो। क्या यह यात्रा लंबे बदलाव लाएगी? यह सोचने लायक है। मथुरा के चार दिनों में कई सभाएं होंगी, जो और गहराई देंगी। कुल मिलाकर, ये झलकियां न सिर्फ मनोरंजन, बल्कि चिंतन का विषय बनीं।

**एकता की लहर: यात्रा का असर और भविष्य की उम्मीदें**

सनातन एकता पदयात्रा ने मथुरा को न सिर्फ भक्ति का केंद्र बनाया, बल्कि समाज को एक नई दिशा दिखाई। हजारों लोग जुड़ने से स्थानीय अर्थव्यवस्था को फायदा हुआ—होटल, दुकानें चहल-पहल से गुलजार। लेकिन असली असर तो सामाजिक स्तर पर है, जहां जाति के बंधन ढीले पड़ रहे हैं। कई परिवारों ने बताया कि पहले वे अलग-अलग रहते थे, अब एक साथ आ रहे हैं। यह यात्रा अयोध्या के बाद मथुरा को नई ऊर्जा दे रही है, जो विवादों से ऊपर उठकर शांति की बात करती है।

प्रशासन ने ट्रैफिक और सुरक्षा के पुरख्ता इंतजाम किए, जो दिखाता है कि बड़े आयोजनों के लिए तैयारियां जरूरी हैं। लेकिन क्या यह एकता टिकाऊ होगी? आलोचक कहते हैं कि ऐसे आयोजन अस्थायी उत्साह देते हैं, जबकि समर्थक मानते हैं कि यह जड़ें मजबूत करेगी। धीरेन्द्र जी की सेहत सुधरने से भक्तों में राहत है, और यात्रा वृंदावन की ओर बढ़ रही है। भविष्य में ऐसी और यात्राएं हो सकती हैं, जो पूरे देश को जोड़ें।

यह पदयात्रा एक संदेश है—एकता में ही शक्ति है। अगर हम इसे अपनाएं, तो समाज मजबूत बनेगा। वृंदावन पहुंचकर यह लहर और फैलेगी, शायद नई पीढ़ी को प्रेरित करे। कुल मिलाकर, यह यात्रा न सिर्फ धार्मिक, बल्कि सामाजिक क्रांति का प्रतीक बनी।



# डॉक्टरों की काली साजिश

## दिल्ली ब्लास्ट से खुला राज, 32 कारों से पूरे देश में धमाकों का प्लान

### दिल्ली रेड फोर्ट ब्लास्ट: एक साधारण सुबह का खौफनाक अंत

**दि**ल्ली के ऐतिहासिक रेड फोर्ट के पास 10 नवंबर 2025 को एक कार में धमाका हो गया, जिसमें कम से कम 13 लोग मारे गए और 20 से ज्यादा घायल हो गए। यह घटना सुबह के वक्त हुई, जब लोग रोजमर्रा के कामों में लगे थे। जांच एजेंसियों के मुताबिक, यह एक सुसाइड बॉम्बिंग थी, जिसमें डॉक्टर उमर उन नबी ने खुद कार चलाई थी। कार में भारी मात्रा में विस्फोटक भरा हुआ था, जो हवा में उड़ गया और आसपास के इलाके में तबाही मचा दी। डीएनए टेस्ट से पुष्टि हुई कि उमर ही ड्राइवर था, जो जम्मू-कश्मीर का रहने वाला था और जयश-ए-मोहम्मद जैसे आतंकी संगठनों से जुड़ा हुआ था। यह ब्लास्ट सिर्फ एक हादसा नहीं था, बल्कि एक बड़े नेटवर्क का हिस्सा था, जिसमें पढ़े-लिखे डॉक्टर और मेडिकल स्टूडेंट्स शामिल थे। सुरक्षा बलों ने तुरंत एक्शन लिया और कश्मीर से लेकर हरियाणा तक छापेमारी की। इस मॉड्यूल को 'व्हाइट-कॉलर टेरर' कहा जा रहा है, क्योंकि इसमें अमीर और एजुकटेड लोग थे, जो समाज में सम्मानित दिखते थे। लेकिन सवाल यह उठता है कि ऐसे लोग आखिर क्यों इस रास्ते पर आ जाते हैं? क्या यह सिर्फ धार्मिक कट्टरता है या कुछ और गहरा कारण? जांच में सामने आया कि यह प्लान बाबरी मस्जिद विध्वंस की सालगिरह के आसपास किया गया था, ताकि ज्यादा असर हो। दिल्ली पुलिस ने एंटी-टेरर लॉ के तहत केस दर्ज किया और एनआईए को सौंप दिया। इस घटना ने पूरे देश को हिला दिया, क्योंकि यह दिखाता है कि खतरा कहीं भी हो सकता है, यहां तक कि उन जगहों पर भी जहां हम सुरक्षित महसूस करते हैं। अब सवाल यह है कि क्या हमारी सिक्योरिटी सिस्टम ऐसी साजिशों को पहले पकड़ पाएगी?

**डॉ. निसार उल हसन: कश्मीरी डॉक्टर जिसका नाम आया टेरर मॉड्यूल से कैसे?**

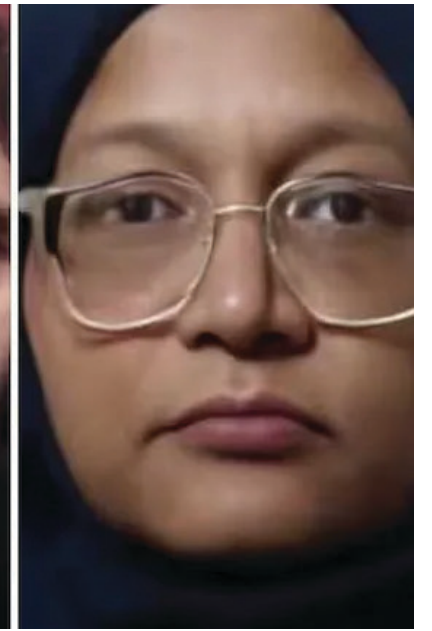
डॉ. निसार उल हसन, एक कश्मीरी डॉक्टर, जिसका नाम दिल्ली ब्लास्ट की जांच में सबसे ऊपर आया, वह 2023 में ही जम्मू-कश्मीर के लेफ्टिनेंट गवर्नर द्वारा आतंकी लिंक्स के चलते नौकरी से निकाल दिया गया था। एलजी ने उसे 'पोटेंशियल टाइम बम' कहा था, लेकिन फिर भी हरियाणा के फरीदाबाद में अल-फलाह यूनिवर्सिटी ने उसे प्रोफेसर के तौर पर हायर कर लिया। ब्लास्ट के बाद निसार गायब हो गया, और जांचकर्ता मानते हैं कि वह इस साजिश का बड़ा प्लेयर था। वह पुलवामा का रहने वाला है और मेडिकल फील्ड में काम करता था। सूत्रों के अनुसार, निसार ने अन्य डॉक्टरों को कनेक्ट किया और विस्फोटकों की सप्लाई में मदद की। अल-फलाह यूनिवर्सिटी अब जांच के घेरे में है, क्योंकि वहां कई संदिग्ध डॉक्टर पढ़ा रहे थे। निसार का केस सोचने पर मजबूर करता है — एक पढ़ा-लिखा इंसान, जो अस्पतालों में लोगों की जान



बचाता था, आखिर कैसे आतंकी की राह पर चला गया? क्या नौकरी से निकाले जाने का गुस्सा था, या कश्मीर के हालात ने धकेला? जांच में पता चला कि निसार तुर्की बेस्ट हैंडलर 'उकासा' से जुड़ा था, जो फंडिंग और गाइडेंस देता था। अब पुलिस उसकी तलाश में जुटी है, और अगर पकड़ा गया तो कई राज खुल सकते हैं। यह मामला दिखाता है कि बैकग्राउंड चेक कितना जरूरी है, खासकर एजुकेशनल इंस्टीट्यूट्स में। समाज को सोचना चाहिए कि ऐसे लोग कैसे सिस्टम से बच जाते हैं, और क्या हमारी निगरानी कमजोर है? निसार की कहानी एक चेतावनी है कि खतरा बाहर से नहीं, भीतर से भी आ सकता है।

**मौलवी इरफान अहमद वागय: डॉक्टरों को धोखे से ब्रेनवॉश करने वाला मास्टरमाइंड**

मौलवी इरफान अहमद वागय, शोपियां जम्मू-कश्मीर का एक मौलवी और हेल्थकेयर वर्कर, जिसे दिल्ली ब्लास्ट के पीछे का ब्रेन कहा जा रहा है। वह फरीदाबाद में एक 'मेडिकल मॉड्यूल' चला रहा था, जहां वह मेडिकल स्टूडेंट्स और डॉक्टरों को धीरे-धीरे रेडिकलाइज कर रहा था। इरफान की गिरफ्तारी के बाद खुलासा हुआ कि वह धार्मिक लेक्चर्स के बहाने युवाओं को मिलता था, और धीरे-धीरे उन्हें जिहाद की बातें सुनाता था। वह कहता था कि यह 'धार्मिक ड्यूटी' है, लेकिन असल में आतंकी नेटवर्क को मजबूत कर रहा था। सूत्र बताते हैं कि इरफान ने कम से कम 7 लोगों को इस जाल में फंसाया, जिनमें डॉक्टर उमर, मुजम्मिल और शाही शामिल थे। वह खुद पैरामेडिकल बैकग्राउंड का था, इसलिए डॉक्टरों से आसानी से कनेक्ट हो जाता था। सवाल उठता है कि एक मौलवी, जो मस्जिदों में नमाज



पढ़ाता है, कैसे इतने पढ़े-लिखे को ब्रेनवॉश कर लेता है? क्या सोशल मीडिया और प्राइवेट मीटिंग्स ने इसमें मदद की? जांच में सामने आया कि इरफान जयश-ए-मोहम्मद से जुड़ा था और तुर्की के हैंडलर्स से पैसे लेता था। अब उसके फोन और लैपटॉप से और सबूत मिल रहे हैं। यह केस सोचने पर मजबूर करता है कि रेडिकलाइजेशन कैसे होता है — धीरे-धीरे, विश्वास के नाम पर। समाज को सतर्क रहना चाहिए, क्योंकि ऐसे लोग चुपचाप नेटवर्क बनाते हैं। इरफान की गिरफ्तारी से मॉड्यूल टूटा, लेकिन क्या पूरी चेन पकड़ी जाएगी?

**32 कारों से धमाकों की साजिश: दिल्ली ब्लास्ट सिर्फ शुरुआत था**

दिल्ली ब्लास्ट की जांच में सबसे डरावना खुलासा यह हुआ कि यह एक बड़े प्लान का हिस्सा था, जिसमें 32 कारों से देशभर के 6 बड़े शहरों में धमाके करने की साजिश थी। यह प्लान 6 दिसंबर को बाबरी मस्जिद विध्वंस की सालगिरह पर अंजाम देने का था, ताकि ज्यादा हलचल मचे। जांच एजेंसियों ने हरियाणा से 2900 किलो विस्फोटक, 20 टाइम्स और दर्जनों डेटोनेटर्स बरामद किए। डॉक्टरों का यह मॉड्यूल कारों में बॉम्ब्स लोड करने का काम कर रहा था, और दिल्ली वाला ब्लास्ट टेस्ट रन था। सूत्रों के मुताबिक, 3 मुख्य डॉक्टर — उमर, मुजम्मिल और निसार — इसकी प्लानिंग कर रहे थे। साजिश तुर्की तक फैली हुई थी, जहां 'उकासा' नाम का हैंडलर गाइड कर रहा था। यह प्लान 5 फेज में था — रिक्रूटमेंट से लेकर एक्जीक्यूशन तक। अब सवाल यह है कि इतना बड़ा नेटवर्क कैसे बन गया, और क्या और लोग शामिल हैं? सुरक्षा बलों ने कश्मीर, हरियाणा और दिल्ली में 100 से ज्यादा रेड्स किए,

लेकिन 32 कारों का पूरा प्लान अभी साफ नहीं हुआ। यह साजिश दिखाती है कि आतंक अब स्मार्ट हो गया है — पढ़े-लिखे लोग, कारों का इस्तेमाल, और टाइमिंग। समाज को सोचना चाहिए कि क्या हमारी इंटेलिजेंस ऐसी चीजें पहले पकड़ सकती है? अगर यह प्लान सफल होता, तो सैकड़ों जिंदगियां जा सकती थीं। अब एनआईए पूरी ताकत से लगी है, लेकिन यह चेतावनी है कि खतरा कहीं भी छिपा हो सकता है।

**व्हाइट-कॉलर टेरर की चुनौतियां: आगे क्या होगा जांच में?**

इस टेरर मॉड्यूल को 'व्हाइट-कॉलर' कहने की वजह यह है कि इसमें डॉक्टर, बिजनेसमैन और क्लेरिक जैसे सम्मानित लोग थे, जो समाज में घुल-मिल जाते थे। 7 लोगों की गिरफ्तारी हो चुकी है, लेकिन जांच अभी जारी है। अल-फलाह यूनिवर्सिटी पर सवाल उठे हैं कि कैसे संदिग्ध डॉक्टरों को हायर किया गया। तुर्की लिंक से इंटरनेशनल एंगल खुला है, और एनआईए अब विदेशी एजेंसियों से मदद ले रही है। सवाल यह है कि रेडिकलाइजेशन रोकने के लिए क्या कदम उठाए जाएं? क्या यूनिवर्सिटीज में बैकग्राउंड चेक सख्त हों? यह मामला सोचने पर मजबूर करता है कि एजुकेशन और जॉब्स के बावजूद लोग क्यों गलत रास्ते पर जाते हैं — क्या बेरोजगारी, कट्टरता या कुछ और? सरकार ने कहा है कि ऐसे तत्वों को बख्शा नहीं जाएगा, लेकिन असली चुनौती नेटवर्क को जड़ से उखाड़ना है। अगर 32 कारों का प्लान टल गया, तो अच्छा है, लेकिन भविष्य में ऐसी साजिशें रोकने के लिए सतर्कता जरूरी है। समाज को एकजुट होकर लड़ना होगा, क्योंकि आतंक किसी एक की समस्या नहीं। यह घटना हमें याद दिलाती है कि शांति बनाए रखना सबकी जिम्मेदारी है।



## कश्मीरी मुसलमानों और आतंकवाद पर उमर अब्दुल्ला का बयान

कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने आज एक बयान दिया है कि दिल्ली में आतंकवादी घटना हुई है हम उसकी निंदा करते हैं लेकिन सारे मुसलमान को आतंकवादी मानने की जो धारणा भारत में बन रही है वह ठीक नहीं है। सारे कश्मीरी मुसलमान भी आतंकवादी नहीं हैं। मेरे विचार में उमर अब्दुल्ला ने जो कहा वह गलत भी है और गलत समय पर भी है। वर्तमान समय में उमर अब्दुल्ला को इस तरह चुप रहना चाहिए था जिस तरह कांग्रेसी चुप हैं राहुल और प्रियंका चुप है क्योंकि वर्तमान परिस्थितियों में सफाई देने की जरूरत नहीं है। वर्तमान समय में उमर अब्दुल्ला को सिर्फ इतना ही करना चाहिए था कि दिल्ली में जो घटना हुई है उससे भारत के मुसलमान को सबक लेना चाहिए वह बहुत घातक है। इससे आम मुसलमान पर बुरा प्रभाव पड़ता है। साथ ही इस घटना से कश्मीर का भी सिर नीचा हुआ है क्योंकि इस घटना में शामिल अधिकांश लोग कश्मीर से जुड़े हुए हैं इसलिए मैं उमर अब्दुल्ला कश्मीर का मुख्यमंत्री होने के नाते अपने देश के मुसलमान भाइयों से यह निवेदन करना चाहता हूं कि इस प्रकार की घटनाओं से बचे क्योंकि ऐसी घटनाएं हमारे सामाजिक व्यवस्था पर बुरा प्रभाव डालते हैं। यदि उमर अब्दुल्ला ऐसी बात कहते तो वर्तमान परिस्थितियों में उचित थी। जो कुछ उन्होंने कहा वह बात उन्हें दो महीने बाद बोलनी चाहिए थी अभी नहीं। और उन्हें इस बात का भी उत्तर देना चाहिए कि यदि सारे मुसलमान आतंकवादी नहीं हैं तो सारे आतंकवादी मुसलमान ही क्यों हैं।

बजरंग मुनि

## भारतीय लोकतंत्र की खोई कड़ी

@ अनुराग पाठक

लोकतंत्र का सबसे मूलभूत सिद्धांत है जनमत का सही प्रतिनिधित्व। यह विचार न केवल राजनीतिक अभियानों की नींव है, बल्कि किसी भी लोकतांत्रिक व्यवस्था के अस्तित्व का आधार भी है। किंतु भारत की वर्तमान चुनावी प्रणाली, विशेषकर प्रथम-मत-पास-प्रणाली, इस सिद्धांत को व्यवहार में अनेक बार चुनौती देती है। चुनाव का परिणाम कई बार उस सार्वजनिक भाव को नहीं दर्शाता जो मतदाताओं ने अपने मतों के माध्यम से व्यक्त किया होता है। वोट प्रतिशत और सीटों की संख्या के बीच का यह असंतुलन अब इतना स्पष्ट हो चला है कि इसे नजरअंदाज करना न सिर्फ कठिन है, बल्कि लोकतंत्र की गुणवत्ता के लिए भी हानिकारक सिद्ध हो सकता है।

हालिया उदाहरण के तौर पर बिहार विधानसभा चुनाव इस विसंगति को उजागर करता है। राष्ट्रीय जनता दल को लगभग 23% मत प्राप्त हुए, परंतु सीटें केवल 25, यानी कुल सदन का मात्र 10%। दूसरी ओर भारतीय जनता पार्टी को 20% मत पर 89 सीटें, अर्थात् लगभग 37% सीटें हासिल हो गईं। यह परिणाम प्रश्न उठाता है कि क्या मौजूदा व्यवस्था मतदाताओं की वास्तविक भावना को प्रतिबिंबित करती है? जब किसी दल को अधिक मत मिलते हैं, पर कम सीटें; और किसी को कम मत मिलने के बावजूद कहीं अधिक सीटें, तब प्रतिनिधित्व का संतुलन टूटता हुआ प्रतीत होता है। यही वह बिंदु है जहाँ समानुपातिक प्रतिनिधित्व (Proportional Representation) प्रणाली की आवश्यकता महसूस होती है। इस प्रणाली में दलों को सीटें उनके वोट प्रतिशत के आधार पर मिलती हैं। मतलब, अगर किसी दल को 20% वोट मिले हैं, तो उसे सदन में लगभग 20% सीटें मिलनी चाहिए। इससे न सिर्फ जनमत का सम्मान होता है बल्कि राजनीतिक विविधता को भी उचित स्थान मिलता है। यह सुनिश्चित करता है कि छोटे और मध्यम राजनीतिक दल भी संसद व विधानसभाओं में अपने उचित अनुपात में प्रतिनिधित्व पा सकें।

समानुपातिक प्रणाली को लागू करने के अनेक लाभ हैं। पहला-लोकतांत्रिक न्याय। मतदाताओं का प्रत्येक वोट समान महत्व रखता है। किसी विशेष क्षेत्र में न्यूनतम अंतर से जीतनेवाला उम्मीदवार पूरे क्षेत्र का प्रतिनिधि

बन जाता है, जबकि हार के मत कहीं “व्यर्थ” हो जाते हैं। समानुपातिक प्रणाली इस समस्या को दूर कर देती है। दूसरा-राजनीतिक स्थिरता और सहयोग की प्रक्रिया विकसित होती है। जब सभी दल अपने वोट के अनुपात में सीटें प्राप्त करते हैं, तो साझा सरकारें और गठबंधन राजनीति अधिक पारदर्शी और संतुलित हो जाती है। तीसरा-धुवीकरण कम होता है, क्योंकि दलों को किसी विशेष जाति, वर्ग या भूगोल पर अत्यधिक निर्भर रहने की आवश्यकता नहीं होती। वे व्यापक समाज का समर्थन पाने के लिए प्रेरित होते हैं।

यह तर्क भी दिया जाता है कि समानुपातिक व्यवस्था से गठबंधन सरकारों का दौर बढ़ जाएगा और स्थिरता कम होगी। परंतु यह तर्क उस वास्तविकता को अनदेखा करता है जो आज भी भारतीय राजनीति में मौजूद है। हमारी अनेक सरकारें गठबंधन आधारित ही रही हैं और सफलतापूर्वक चली भी हैं। स्थिरता अक्सर नेतृत्व, सहमति और नीतिगत विश्वास से आती है, न कि केवल संख्या के खेल से। इसके अतिरिक्त, समानुपातिक चुनाव प्रणाली क्षेत्रीय असमानताओं को भी संतुलित कर सकती है। आज कुछ राज्यों में किसी दल को भारी बहुमत मिलता है, जबकि अन्य राज्यों में उसे कमजोर समर्थन। लेकिन राष्ट्रीय स्तर पर उसके कुल वोट प्रतिशत के आधार पर उसे सीटें मिलने से प्रतिनिधित्व अधिक न्यायसंगत बन सकता है। भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश के लिए आवश्यक है कि लोकतंत्र की संरचना ऐसी हो जिसमें हर आवाज और हर समूह का प्रत्यक्ष प्रतिबिंब दिखाई दे। समानुपातिक प्रतिनिधित्व न केवल उन लाखों मतों को मूल्य देता है जो वर्तमान प्रणाली में गैर-प्रभावी हो जाते हैं, बल्कि राजनीति को अधिक समावेशी, संवाद-आधारित और संतुलित बनाने की क्षमता भी रखता है। अब समय आ गया है कि भारत इस बहस को गंभीरता से ले। दुनिया के कई लोकतांत्रिक देशों-जर्मनी, नीदरलैंड, स्वीडन, इजराइल-ने समानुपातिक प्रणाली को अपनाकर अपने राजनीतिक ढांचे को अधिक प्रतिनिधिक और मजबूत बनाया है। भारत भी यदि इस दिशा में कदम बढ़ाए तो लोकतंत्र की गुणवत्ता निश्चित रूप से और बेहतर होगी। लोकतंत्र केवल मतदान नहीं, बल्कि मतों का सम्मान भी है। जब तक मत और सीटों का संतुलन नहीं सुधरेगा, तब तक प्रतिनिधित्व अधूरा रहेगा। समानुपातिक प्रणाली इस अधूरेपन को पूरा करने का सबसे तार्किक और न्यायपूर्ण समाधान है।

## जुबानी तीर

“

कुछ लोगों ने कहा कि मेरी किडनी गंदी है, वो एक बेटी, बहन, विवाहिता महिला और मां हैं, मैंने मायके छोड़ा क्योंकि मुझे हालात में अनाथ जैसा महसूस हुआ।



रोहिणी आचार्य ( लालू प्रसाद यादव की बेटी )

“

मैं इस पर बहुत ज्यादा टिप्पणी नहीं करूंगा, क्योंकि मैं समझता हूँ कि जब परिवार में ऐसी जटिलता होती है, तो मानसिक स्थिति बहुत नाजुक हो जाती है। मैंने भी अपने जीवन में ऐसी



मुश्किलें देखी हैं।  
चिराग पासवान (जनता दल-(एल)

“

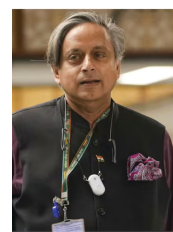
मैं परिवार के निजी मसले में बहुत कुछ कहना नहीं चाहता, लेकिन लालू जी और राबड़ी देवी से यह कहना चाहता हूँ कि परिवार को इस तरह टूटने नहीं देना चाहिए। रोहिणी ने किडनी दान कर जो बलिदान दिया है, उसे यह नहीं होने



देना चाहिए कि आज उसे अपमान झेलना पड़े।  
दिलिप जायसवाल (भाजपा, बिहार)

“

मैं इस बात पर जोर देना चाहता हूँ कि चुनाव के बाद सभी को आत्म-निरीक्षण करना चाहिए। रोहिणी का खुलासा इसलिए भी गंभीर है क्योंकि यह शक्ति संरचना, पारिवारिक जवाबदेही और महिलाओं की सुरक्षा से जुड़ा है। लेकिन मुझे लगता है कि हमें तथ्यों को जानने के बाद



निष्कर्षों पर पहुंचना चाहिए।  
शशि थरूर (कांग्रेस सांसद)



# पथरी ठीक करने का आयुर्वेदिक उपाय

**श**रीर में पथरी बनने की समस्या आज के समय में बहुत आम हो चुकी है। गलत खानपान, कम पानी पीना और अनियमित जीवनशैली इसके प्रमुख कारण हैं। आधुनिक चिकित्सा विज्ञान पथरी के उपचार के लिए औषधि और सर्जरी दोनों विकल्प देता है, लेकिन आयुर्वेद पथरी को जड़ से ठीक करने के लिए प्राकृतिक और सुरक्षित तरीके सुझाता है। आयुर्वेद सिर्फ पथरी निकालने पर नहीं, बल्कि दोबारा पथरी न बने इस पर भी ध्यान देता है। यहां पथरी के कारण, लक्षण और प्रमुख आयुर्वेदिक उपचारों को व्यवस्थित तरीके से समझाया गया है।

## पथरी कैसे बनती है?

हमारी किडनी शरीर के अनावश्यक तरल पदार्थों को फिल्टर करती है। जब शरीर में कैल्शियम, यूरिक एसिड या ऑक्सीलेट जैसे तत्व अत्यधिक मात्रा में जमा हो जाते हैं और पानी कम पीने की वजह से यह पदार्थ घुल नहीं पाते, तब ये एक जगह इकट्ठे होकर छोटे-छोटे क्रिस्टल बना लेते हैं। यही क्रिस्टल आगे चलकर पथरी का रूप ले लेते हैं। आयुर्वेद में इसे अश्मरी कहा गया है और इसे वात, पित्त, कफ के असंतुलन से जोड़कर देखा गया है।

## पथरी के लक्षण

पथरी होने पर शुरुआती लक्षण अक्सर नजरअंदाज हो जाते हैं, लेकिन जैसे-जैसे पथरी बड़ी होती है, दर्द और परेशानी बढ़ती जाती है। आमतौर पर देखे जाने वाले लक्षण:

- कमर या पेट के दाईं/बाईं ओर तेज दर्द
- पेशाब में जलन और कठिनाई
- पेशाब में रक्त
- लगातार उलझन या मितली
- पेशाब का बार-बार आना

## पेट में भारीपन या खिंचाव महसूस होना

आयुर्वेदिक दृष्टि से ये लक्षण तब उभरते हैं जब शरीर में पित्त बढ़ जाता है और मूत्रमार्ग में अवरोध उत्पन्न करता है।

## आयुर्वेद क्या कहता है

आयुर्वेद पथरी को तीन प्रकारों में बांटता है – कफज, पित्तज और वातज अश्मरी।

हर प्रकार की पथरी में उपचार अलग-अलग हो सकता है, लेकिन आयुर्वेद का मूल उद्देश्य तीनों दोषों का संतुलन बनाना और मूत्रमार्ग को साफ करना है।

आयुर्वेदिक जड़ी-बूटियां जो पथरी में सबसे प्रभावी मानी जाती हैं

### 1. गोखरू

गोखरू एक शक्तिशाली मूत्रवर्धक औषधि है। यह मूत्रमार्ग को साफ करता है और पथरी को छोटे कणों में तोड़ने में मदद करता है।

**उपयोग:** गोखरू के बीजों के काढ़े का नियमित सेवन पथरी को निकालने में सहायता करता है।

### 2. वरुण

आयुर्वेद में इसे “पथरी का प्रमुख नाशक” कहा गया है। यह किडनी में जमा ठोस तत्वों को घुलाने का काम



करता है।

**उपयोग:** वरुण के अर्क या काढ़े का सेवन अत्यंत लाभकारी है।

### 3. पुनर्नवा

पुनर्नवा शरीर में जमा यूरिक एसिड और टॉक्सिन को निकालने में मदद करता है। यह सूजन कम करता है और नेफ्रॉन को स्वस्थ बनाता है।

**उपयोग:** पुनर्नवा चूर्ण या अर्क का सेवन।

### 4. कुल्थी दाल (हॉर्स ग्राम)

कुटकी दाल को पथरी निकालने में बहुत कारगर माना जाता है। यह मूत्र को पतला करती है और पथरी को घिसकर निकालने में सहायता करती है।

**उपयोग:** कुल्थी दाल का काढ़ा।

### 5. भिंडी के बीज

भिंडी के बीजों में ऐसे तत्व होते हैं जो कैल्शियम ऑक्सलेट क्रिस्टल को बनने से रोकते हैं।

**उपयोग:** बीजों को सुखाकर चूर्ण बनाएं और पानी के साथ लें।

### 6. शिलापुष्पी

यह छोटी पथरियों को घुलाकर मूत्रमार्ग से बाहर निकालने में मदद करती है।

**उपयोग:** काढ़ा या चूर्ण के रूप में।

## दैनिक आहार जिसे आयुर्वेद सबसे जरूरी मानता है

आयुर्वेदिक चिकित्सक पथरी के रोग में भोजन को दवा जितना ही महत्वपूर्ण मानते हैं। कुछ खाद्य पदार्थ पथरी को बढ़ाते हैं जबकि कुछ उसे गलाने में मदद करते हैं।

- क्या खाना चाहिए
- अधिक मात्रा में पानी
- नारियल पानी

barley water (जौ का पानी)

- नींबू पानी
- कुल्थी दाल
- तरबूज
- खीरा और ककड़ी
- पपीता
- लौकी का जूस
- क्या नहीं खाना चाहिए
- पालक
- टमाटर के बीज
- चुकंदर
- चाय-कॉफी ज्यादा
- रेड मीट
- तली चीजें
- हाई-प्रोटीन डाइट
- अधिक नमक

## आयुर्वेद में बताए धरेलू नुस्खे

### 1. नींबू और जैतून का मिश्रण

यह पथरी को घुलाने का बेहद पुराना तरीका है। तरीका: एक गिलास गुनगुने पानी में नींबू का रस और एक चम्मच जैतून तेल मिलाकर पिएं।

### 2. जौ का पानी

जौ शरीर से अधिक यूरिक एसिड बाहर निकालता है। तरीका: जौ को पानी में उबालकर छान लें और रोज सुबह सेवन करें।

### 3. नारियल पानी

किडनी को साफ करता है और पथरी निकालने में मददगार है।

### 4. अनार के दाने और छिलका

अनार सूजन कम करता है और पथरी को तोड़ता है। तरीका: अनार के दानों का रस या सूखे छिलके का चूर्ण।

### 5. गाजर-खीरा जूस

मूत्रमार्ग को साफ रखता है और टॉक्सिन बाहर निकालता है।

## आयुर्वेदिक पंचकर्म से राहत

आयुर्वेदिक अस्पतालों में पथरी के लिए विशेष पंचकर्म उपचार किए जाते हैं। जैसे:

- उदर शोधन
- वस्ती (औषधीय एनिमा)
- कषाय धारा
- ये उपचार शरीर की भीतरी सफाई कर पथरी बनने की प्रक्रिया को रोकते हैं।
- पथरी दोबारा न बने इसके लिए आयुर्वेदिक सलाह दिन में कम से कम 10-12 गिलास पानी सोडियम और प्रोटीन की मात्रा सीमित
- तनाव कम रखें
- नियमित रूप से जौ या कुल्थी का सेवन
- नींबू पानी आदत में शामिल करें

## मूत्र रोककर न रखें

आयुर्वेद मानता है कि पथरी बार-बार लौटकर इसलिए आती है क्योंकि जीवनशैली और आहार में सुधार नहीं किया जाता। अगर ये दोनों संतुलित रहें, तो पथरी की समस्या भविष्य में लगभग खत्म हो सकती है। पथरी एक गंभीर समस्या है, लेकिन आयुर्वेद इसे प्राकृतिक तरीके से नियंत्रित करने और जड़ से ठीक करने का मार्ग देता है। गोखरू, वरुण, पुनर्नवा और कुल्थी जैसी औषधियां पथरी को घिसकर बाहर निकाल रही हैं। सही खानपान, पर्याप्त पानी, और जीवनशैली में सादगी अपनाकर कोई भी व्यक्ति इस रोग से काफी हद तक बच सकता है। आयुर्वेद की खास बात यही है कि यह केवल रोग का उपचार नहीं करता, बल्कि पूरा जीवन संतुलित करने की प्रक्रिया है, जिससे पथरी जैसी समस्या दोबारा न हो।



# महात्मा सरयूदास जी: भगवत् भक्ति के दिव्य दीपक परम पवित्र भूमि का अमूल्य रत्न

गुजरात की वह पावन धरती, जो परम भागवत् नरसी मेहता की माधुर्य भरी वाणी से सिकुड़ी हुई है, महाज्ञानी भक्त अखा की गहन ज्ञानधारा से सिंचित है, और रसिक भक्त दयाराम भाई की सरस रचनाओं से आनंदमग्न है, उसने समय-समय पर असंख्य ज्ञानी, भक्त, योगी और संत-महात्माओं को अपनी वात्सल्यमयी गोद में पाल-पोसकर भगवत् कृपा का दान दिया है। इसी दिव्य भूमि पर, अभी कुछ ही दिनों पहले, महात्मा सरयूदास जी ने भगवद्भक्ति और कथा-कीर्तन के माध्यम से अनगिनत प्राणियों के जीवन को चिरगौरवमय बना दिया। भौतिक विज्ञानप्रधान इस युग को उन्होंने धर्म और विश्वास की अलौकिक ज्योति से आश्चर्यचकित कर दिया, आत्मज्ञान और भगवद्भक्ति से सम्पन्न कर दिया। यही उनके भागवत् जीवन की ऐतिहासिकता है, जो विनम्रता, सत्यवादिता और मितभाषणकारिता का जीवंत प्रतीक बनकर चमकता है। जगत के सुख-दुख से परम निरपेक्ष रहकर वे निर्भयतापूर्वक भगवत् चिंतन में लीन रहते थे। अपरिग्रह और जड़-चेतन-समस्त सृष्टि के प्रति समदृष्टि का उनमें ऐसा आधिक्य था कि प्रत्येक कण में भगवान का प्रतिबिंब झलकता प्रतीत होता। परोपकार को वे अत्यंत बड़ा पुण्य मानते थे, दीन-हीन असहाय जनों की सेवा-सुश्रूषा के लिए लोगों को निरंतर प्रोत्साहित करते रहते। वे आत्मानंदी महात्मा थे, सदा अपने आप में दिव्य शांति का अनुभव करते, मानो भगवान की कृपा उनके हृदय में अनंत नदी की तरह बह रही हो। उनकी यह भक्ति-धारा इतनी गहन थी कि देखने वाले का मन स्वयं ही भगवत् स्मरण में डूब जाता। गुजरात की यह भूमि उनके जैसे संतों से ही तो पावन बनी है, जहां हर सांस भगवान के नाम से संनादित हो।

## जन्म और बाल्यावस्था का सात्विक स्वरूप

महात्मा सरयूदास जी का जन्म अहमदाबाद जनपद के पाटड़ी ग्राम में सम्वत् 1904 वि. की श्रावण कृष्ण अष्टमी को हुआ था। उनके पिता प्रभुदास और माता गंगा बहिन की आस्तिकता और भगवन्निष्ठा ने सरयूदास जी के बाल्य जीवन को सात्विकता और दिव्य गुणों से सम्पन्न कर दिया था। उनका परिवार परम पवित्र और भागवत् था, जहां हर कार्य भगवान की भक्ति से ओतप्रोत रहता। सरयूदास जी के भाई का नाम गोविंद था, और काशी तथा जमुना नाम की दो बहनें भी थीं। उनकी बाल्यावस्था मोसाल में बीती, जहां वजा भगत और जोड़ाराम भगत के सम्पर्क में आकर उन्होंने सत्संग और ईश्वरभक्ति का अपार आनंद प्राप्त किया। बचपन का नाम भोगीलाल था, जो बालक रूप में ही भगवान के प्रति असीम आकर्षण का शिकार था। उनके मामा ने उन्हें दुकान का कार्य सौंप दिया था, वे उन्हें घर-गृहस्थी के कार्यों में व्यस्त रखना चाहते थे। मामा को प्रसन्न रखने के लिए भोगीलाल दुकान पर बैठे रहते, किंतु मन अनवरत् भगवान के चरण-चिंतन में लीन रहता। उनके समस्त संस्कार भक्तिमूलक थे, भगवान के प्रति अडिग विश्वास ही उनका एकमात्र धन था। यह बाल्यकाल ऐसा था मानो भगवान ने स्वयं ही उनके हृदय में अपना निवास बना लिया हो, और हर खेल-कूद, हर



दैनिक क्रिया भक्ति का रूप धारण कर ले। मोसाल के उन भगतों की संगति ने उनके मन को ऐसा शुद्ध कर दिया कि भोगीलाल का प्रत्येक क्षण भगवत् स्मृति से भरपूर हो गया। परिवार की यह भागवत् परंपरा उनके जीवन का आधार बनी।

## वैराग्य का उदय और प्रारंभिक घटनाएँ

अल्पायु में ही भोगीलाल का विवाह हो गया था। थोड़े ही समय के बाद पत्नी का देहावसान हो गया। इस घटना में उन्होंने प्रभु का मंगलमय विधान देखकर अपने आपको बंधनमुक्त अनुभव किया। सगे-संबंधियों ने दूसरे विवाह का प्रस्ताव रखा, किंतु महात्मा सरयूदास ने अस्वीकार कर दिया। धीरे-धीरे उनकी वैराग्य-वृत्ति बढ़ने लगी। एक दिन ग्राम में चार-पाँच साधु आए। दोपहर का समय था, भिक्षा माँगने का समय समाप्त हो चुका था। भोगीलाल की दृष्टि संतों पर पड़ गई। उनके देखते संत भूखे ही रह जाएँ, यह कैसे संभव? भोगीलाल ने घर में आटे की खोज की, पर आटा केवल ढाई मन था, इतने से काम चलने वाला नहीं था। वे स्वयं आटा पीसने बैठ गए और आनंदपूर्वक पर्याप्त आटे से संतों के भोजन की व्यवस्था की। यह घटना स्पष्ट करती है कि संत-सेवा में उनकी कितनी रुचि थी, जो वैराग्य के बीज को और पुष्ट कर रही थी।

एक अन्य दिन वे अपने मामा की दुकान पर बैठे थे। शाम का समय था। अचानक मंदिर में घंटानाद सुन पड़ा। भगवान की आरती हो रही थी। वे समस्त बाह्यज्ञान से शून्य होकर आरती-दर्शन के लिए मंदिर की ओर चल पड़े। दुकान में ताला लगाने तक की बात का स्मरण न रहा। दूसरे दिन मामा विग्रह करने लगे तो वे मौन और उदासीन हो गए। तनिक भी मतप्रदर्शन न हुआ। यह वैराग्य का प्रारंभिक स्वरूप था, जहां भगवान का आह्वान हृदय को इतना आकर्षित कर लेता कि संसार की कोई बाधा बाधा न रह जाती। भोगीलाल पाटड़ी में रहने लगे, किंतु उनका मन अब गृहस्थी से परे भक्ति की ओर उन्मुख हो चुका

था। इन घटनाओं ने उनके जीवन को एक नई दिशा दी, जहां हर क्षण भगवत् चिंतन ही प्रधान हो गया। वैराग्य की यह ज्वाला धीरे-धीरे प्रज्वलित होती गई, मानो भगवान स्वयं उनके हृदय में दीपक जला रहे हों।

## गुरुप्राप्ति और शिष्यत्व का दिव्य मार्ग

पाटड़ी में रहते हुए एक मास्य पाटड़ी में दैवयोग से नागवाड़ा की ओर से महात्मा भगवानदास जी का आगमन हुआ। उनके साथ अनेक शिष्य थे। वे वृक्ष के नीचे धूनी रमा कर बैठ गए। भोगीलाल उनके सत्संग से गहन प्रभावित हुए। भगवानदास जी के शिष्य आत्माराम भोगीलाल के वैराग्यपूर्ण जीवन से बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने अपने गुरु से भोगीलाल को शिष्य रूप में स्वीकार करने की प्रार्थना की। महात्मा भगवानदास ने भोगीलाल को गुरुमंत्र प्रदान कर उनका नाम सरयूदास रखा। गाँववालों में कानाफूसी आरंभ हो गई कि इतनी कम अवस्था में भोगीलाल का सन्यास लेना कदापि उचित नहीं है। उन्होंने भोगीलाल को एक कमरे में तीन दिनों तक बंद रखा, पर इसका कुछ भी परिणाम न हुआ। महात्मा भगवानदास ने पाटड़ी छोड़ दिया। इधर बंधनमुक्त होते ही महात्मा सरयूदास गुरु की खोज में चल पड़े। गुरु से भेंट होने पर वे उनके साथ पर्यटन करते-करते अहमदाबाद आए। इस पर्यटन-काल में उन्होंने गुरु की सेवा की और निश्चित मन से शास्त्रों का अध्ययन किया। गुरु की यह कृपा उनके जीवन का आधार बनी, जो भक्ति की गहनता को और बढ़ाती गई। सरयूदास जी का यह शिष्यत्व ऐसा था मानो भगवान ने स्वयं गुरु रूप धारण कर लिया हो, और हर सेवा, हर अध्ययन भगवत् प्राप्ति का साधन बन गया। पर्यटन के इन दिनों में शास्त्रों की गहराई ने उनके हृदय को भगवान के प्रेम से भर दिया, जो आगे चलकर कथा-कीर्तन का आधार बनी।

## मुरलीधर मंदिर का समर्पण और सेवा का स्वरूप

दरियापुर वाड़ी ग्राम में त्रिकमदास पटेल ने सरयूदास महाराज की सेवा में मुरलीधर मंदिर समर्पित किया। महाराज तो स्वच्छंद रूप से विचरने वाले संत थे, यह समर्पण उनके लिए भार का विषय था, पर भगवान की कृपा से मंदिर में अन्नक्षेत्र की स्थापना हो गई और सरयूदास महाराज का भार हल्का हो गया। कुछ दिनों के पश्चात् महात्मा भगवानदास ब्रह्मलीन हो गए। मुरलीधर-मंदिर में भगवद्विग्रह की सेवा का कार्य आत्माराम जी ने संभाला। महात्मा सरयूदास एकांत सेवन करने लगे। उनके जीवन का अधिकांश भाग भगन्नाम-कीर्तन, कथा और सत्संग में ही बीतने लगा। कुछ दिनों तक अहमदाबाद में निवास कर वे पर्यटन के लिए निकल पड़े। वे पूर्ण रूप से सन्यासी हो गए। माता का देहावसान होने पर वे उनके अग्नि-संस्कार में सम्मिलित हुए थे, उनकी अंत्येष्टि की थी, इसके अतिरिक्त वे किसी भी लौकिक कार्य में न पड़े थे। मुरलीधर मंदिर यह भक्ति का केंद्र बन गया, जहां भगवान का विग्रह प्रत्येक दर्शन में जीवंत हो उठता। सरयूदास जी का एकांत सेवन ऐसा था कि मंदिर की हर

ईंट में भगवत् भक्ति का स्पंदन सुनाई देता। अन्नक्षेत्र की यह व्यवस्था भगवान की लीला थी, जो असंख्य भक्तों को आकर्षित करती रही। पर्यटन के इन वर्षों में उनका जीवन भगवान की खोज में लीन रहा, हर स्थान पर सत्संग का आयोजन हो जाता।

## भक्ति जीवन और परोपकार की दिव्य ज्योति

महात्मा सरयूदास आत्मानंदी महात्मा थे। नश्वर शरीर का उनकी दृष्टि में कुछ भी महत्व नहीं था। समस्त जड़-चेतन में वे आत्मदर्शन करते थे। एक बार गुजरात में बड़ा भयंकर अकाल पड़ा। लाखों प्राणी भूख से मरने लगे। सबमें अपने आपको देखने वाले महात्मा सरयूदास का हृदय दया से द्रवित हो उठा। वे अकाल के दिनों में नित्य 25 मन अनाज का रोटी बनवाने लगे। प्रत्येक अतिथि को एक सेर रोटी और दाल देने की व्यवस्था थी। इस प्रकार उन्होंने भगवान की कृपा से असंख्य प्राणियों के प्राण बचाए। परोपकार और असहायों की सेवा में उनकी बड़ी रुचि थी। जड़-चेतन सबमें उनकी ईश्वर-भावना थी। उन्होंने किसी को भी शिष्य के रूप में स्वीकार नहीं किया। यदि कोई श्रद्धालु व्यक्ति माला और तिलक आदि से समलंकरित करना चाहता था तो स्पष्ट कह दिया करते थे कि भगवान मुरलीधर को समर्पित कर दो। बड़ी सावधानी से रास्ता चलते थे कि कहीं ऐसा न हो कि पैर के तले कोई जीव दब जाए। यदि कोई वृक्ष का पत्ता लेने आता था तो उससे कह दिया करते थे कि वृक्ष में भगवान का निवास है, पत्ता तोड़कर ले जाने के पहले वृक्ष से क्षमा-याचना करो। यह परोपकार की भावना इतनी गहन थी कि हर प्राणी उनके लिए भगवान का अंश प्रतीत होता। अकाल के उन दिनों में रोटीयों का यह वितरण भगवान की कृपा का प्रत्यक्ष प्रमाण था, जो हृदय को भक्ति से भर देता। उनकी समदृष्टि सृष्टि के प्रत्येक कोने में भगवान का दर्शन कराती, और सेवा का यह स्वरूप भक्ति का ही रूप था।

## कथा-कीर्तन का अमृत वितरण

वे नित्य शाम को मुरलीधर मंदिर में नियमपूर्वक श्रीमद्भागवत की कथा कहा करते थे। प्रातः काल पारस भाग की कथा कहने का नियम था। उनकी कथा में अनगिनत व्यक्ति सम्मिलित होते थे। विशेष आग्रह पर उन्होंने स्त्रियों के लिए भी कथा में बैठने की व्यवस्था करा दी थी। अंत्यजों को भी महाराज की कृपा से कथा-श्रवण की पूरी-पूरी सुविधा प्राप्त थी। महाराज का सम्पूर्ण जीवन ही साधनामय था, भक्ति का प्रचार ही उनकी साधना का स्वरूप था। महाराज ने गुजरात में भागवत् धर्म का प्रचार किया। यह कथा-कीर्तन भगवान की लीला का वर्णन था, जो श्रोताओं के हृदय में भक्ति का अमृत घोल देता। शाम की भागवत् कथा में भगवान के गुणों का वर्णन ऐसा होता कि वातावरण भक्तिमय हो जाता। प्रातः की पारस भाग कथा आत्मज्ञान की ज्योति प्रज्वलित करती। स्त्रियों और अंत्यजों की यह समावेशिता भगवान की समदृष्टि का प्रतिबिंब थी, जो गुजरात के भागवत् धर्म को और मजबूत बनाती। महाराज की यह साधना भक्ति का प्रचार करने में इतनी निपुण थी कि दूर-दूर से भक्त आकर्षित होते।



# दुनिया के सबसे सख्त एजुकेशन सिस्टम: चुनौती या सफलता का राज? कौन हैं ये 10 देश, जहां पढ़ाई का बोझ सबसे भारी है?

**दु**निया भर में कई देश ऐसे हैं जहां एजुकेशन सिस्टम इतना कठिन होता है कि छात्रों को दिन-रात मेहनत करनी पड़ती है। 2025 की ताजा रिपोर्ट्स के मुताबिक, साउथ कोरिया टॉप पर है, जहां कॉलेज एंट्रेंस एग्जाम सैट जैसा होता है, जो सिर्फ 8 घंटे का होता है लेकिन साल भर की तैयारी मांगता है। छात्र सुबह 8 बजे स्कूल जाते हैं और रात 10 बजे तक प्राइवेट ट्यूशन सेंटर या हागवॉन में पढ़ते रहते हैं। जापान दूसरे नंबर पर है, जहां जुकु नाम के एक्स्ट्रा क्लासेस छात्रों को मैथ और साइंस में परफेक्ट बनाने पर जोर देते हैं, लेकिन इससे नींद की कमी और स्ट्रेस की समस्या बढ़ जाती है। चीन तीसरे स्थान पर है, गाओकाओ एग्जाम के कारण, जो लाखों छात्रों की जिंदगी तय करता है और सिर्फ 0.1 प्रतिशत ही टॉप यूनिवर्सिटी में जगह पाते हैं। सिंगापुर चौथा है, जहां प्राइमरी से ही हाई स्टैंडर्ड टेस्ट होते हैं और रैंकिंग पर फोकस रहता है। फिनलैंड पांचवें नंबर पर आता है, लेकिन यहां टफनेस कम्पटीशन में है, न कि घंटों की पढ़ाई में। रूस छठे स्थान पर है, जहां मैथ और फिजिक्स जैसे सब्जेक्ट्स में वर्ल्ड क्लास लेवल की तैयारी करनी पड़ती है। भारत सातवें नंबर पर है, आईआईटी-जेईई और नीट जैसे एग्जाम्स से लाखों छात्र दबाव में जीते हैं। हॉन्गकॉन्ग आठवें पर, जहां डेंस पॉपुलेशन के कारण कॉम्पिटिशन कट-थ्रोट है। स्विट्जरलैंड नौवें स्थान पर, वोकेशनल ट्रेनिंग के साथ सख्त अकादमिक स्टैंडर्ड्स। आखिर में अमेरिका दसवें पर, जहां एपी कोर्सेज और सैट स्कोर कॉलेज एडमिशन के लिए जरूरी हैं। ये सिस्टम छात्रों को डिसिप्लिन सिखाते हैं लेकिन मानसिक हेल्थ पर असर भी डालते हैं। कई स्टडीज दिखाती हैं कि इन देशों में सुसाइड रेट हाई है, खासकर एशियन कंट्रीज में। फिर भी, ये सिस्टम इन देशों को इकोनॉमिक सुपरपावर बनाते हैं, क्योंकि हाई स्किलड वर्कफोर्स मिलता है। भारत जैसे डेवलपिंग कंट्री के लिए ये मॉडल्स सीखने लायक हैं, लेकिन कॉपी करने से पहले लोकल कंडीशंस देखनी चाहिए। कुल मिलाकर, ये 10 देश बताते हैं कि टफ एजुकेशन सफलता की सीढ़ी चढ़ने में मदद करता है, लेकिन सीढ़ी फिसलन भरी भी हो सकती है।

## एजुकेशन सिस्टम: देश की कामयाबी का असली ड्राइवर या सिर्फ एक फैक्टर?

कई स्टडीज बताती हैं कि एक देश की सफलता उसके एजुकेशन सिस्टम से काफी हद तक जुड़ी हुई है, लेकिन ये अकेला फैक्टर नहीं है। वर्ल्ड बैंक की 2025 रिपोर्ट के अनुसार, हर एक्स्ट्रा ईयर ऑफ स्कूलिंग से घंटे की कमाई में 9 प्रतिशत इजाफा होता है, जो लॉन्ग-टर्म इकोनॉमिक ग्रोथ को बूस्ट करता है। फिनलैंड और सिंगापुर जैसे देश, जहां एजुकेशन क्वालिटी हाई है, वो इनोवेशन और सोशल कोहेजन में लीड करते हैं। उदाहरण के तौर पर, साउथ कोरिया ने 1960s में खराब एजुकेशन सिस्टम से शुरू करके आज वर्ल्ड की टॉप टेक इकोनॉमी बना ली, क्योंकि सख्त पढ़ाई ने हाईली स्किलड वर्कर्स तैयार किए। इसी तरह, जापान की डिसेप्लिन्ड एजुकेशन ने पोस्ट-वॉर रिकवरी में मदद की। लेकिन ये रिलेशनशिप सीधी नहीं है; इकोनॉमिक्स, पॉलिटिक्स और कल्चर भी रोल प्ले करते हैं। अमेरिका में एजुकेशन सिस्टम टफ है



लेकिन इनइक्वालिटी हाई, इसलिए ओवरऑल सक्सेस मिक्सड है। एक स्टडी से पता चलता है कि 30 कंट्रीज अमेरिका को हाई स्कूल मैथ में पीछे छोड़ चुकी हैं, जो इकोनॉमिक स्टेक्स को हाईलाइट करता है। फिर भी, एजुकेशन इनोवेशन स्पर्स करता है और पीस को प्रमोट करता है। भारत के केस में, नेप 2020 ने एजुकेशन को GDP ग्रोथ से लिंक किया है, लेकिन इंप्लीमेंटेशन चैलेंजेस हैं। कुल मिलाकर, अच्छा एजुकेशन सिस्टम सक्सेस का मजबूत बेस बनाता है, लेकिन बिना सपोर्टिंग फैक्टर्स के ये अकेला कमाल नहीं कर सकता। ये सोचने पर मजबूर करता है कि क्या हम सिर्फ स्कोर्स पर फोकस करें या होलिस्टिक डेवलपमेंट पर। बैलेंस्ड अप्रोच ही असली कुंजी लगती है, जहां एजुकेशन न सिर्फ जॉब्स दे बल्कि हैप्पी सिटिजन्स भी बनाए।

## सख्त एजुकेशन: बच्चों को सुपरस्टार बनाता है या सिर्फ स्ट्रेस का शिकार?

सख्त एजुकेशन सिस्टम के फायदे और नुकसान दोनों हैं, जो स्टडीज से साफ दिखते हैं। एक तरफ, ये छात्रों को डिसेप्लिन, हाई अचीवमेंट और वर्क एथिक्स सिखाता है। साउथ कोरिया और जापान जैसे देशों में स्ट्रिक्ट क्लासरूम डिसेप्लिन से स्टूडेंट आउटकम्स बेहतर होते हैं, जैसे मैथ और साइंस में टॉप रैंकिंग। एक रिसर्च दिखाती है कि प्रेशर टू परफॉर्म से मोटिवेशन बढ़ता है और फाउंडेशनल स्किल्स स्ट्रॉंग बनते हैं। लेकिन दूसरी

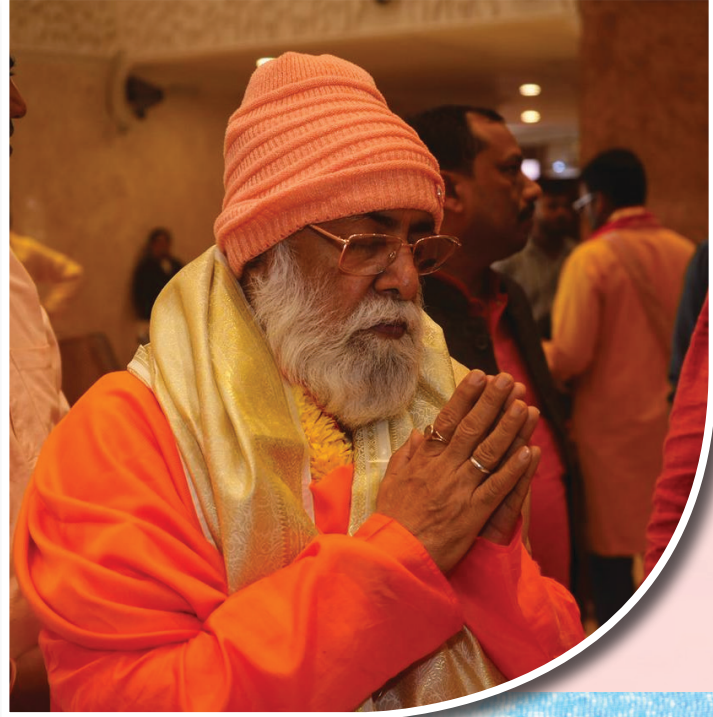
तरफ, एक्सेसिव प्रेशर से मेंटल हेल्थ प्रॉब्लम्स बढ़ जाते हैं। 2025 की रिपोर्ट्स के मुताबिक, स्ट्रेस से डिप्रेशन, एंग्जायटी और यहां तक कि सुसाइड रेट हाई हो जाता है, खासकर एशियन कंट्रीज में। होमवर्क का ज्यादा बोझ फिजिकल हेल्थ को हट करता है, जैसे थकान और स्लीप लॉस। एक स्टडी कहती है कि हाई स्टेक्स अचीवमेंट सिस्टम में स्ट्रेस लेवल ज्यादा होता है, जो एकेडमिक परफॉर्मेंस को डाउन भी कर सकता है। इमोशनल इंस्टेबिलिटी लर्निंग प्रोसेस को डिस्टर्ब करती है। फिर भी, बैलेंस्ड अप्रोच जैसे फिनलैंड में, जहां कम होमवर्क और प्ले टाइम है, स्ट्रेस कम होता है लेकिन आउटकम्स हाई रहते हैं। स्ट्रिक्ट सिस्टम बच्चों को बेहतर बना सकता है अगर प्रेशर को मैनेज किया जाए, जैसे काउंसलिंग और ब्रेक्स से। लेकिन बिना चेक के ये सिर्फ दबाव बढ़ाता है, जो लॉन्ग-टर्म में हानिकारक है। भारत में भी कोचिंग कल्चर से यही प्रॉब्लम है। सोचिए, क्या हम बच्चों को मशीन बनाना चाहते हैं या क्रिएटिव थिंक्स? फायदे लेने के लिए स्मार्ट बैलेंस जरूरी है, जहां डिसेप्लिन हो लेकिन स्पेस भी।

## भारत के लिए रास्ता: कोरिया का अनुशासन अपनाएं या फिनलैंड की आजादी चुनें?

भारत के एजुकेशन सिस्टम को रिफॉर्म करने के लिए साउथ कोरिया का डिसेप्लिन और फिनलैंड की फ्लेक्सिबिलिटी दोनों से सीखने की जरूरत है, लेकिन लोकल कंडीशंस को ध्यान में रखकर। साउथ कोरिया

मॉडल से डिसेप्लिन और हाई स्टैंडर्ड्स ले सकते हैं, जहां रीगरस ट्रेनिंग से ग्लोबल कॉम्पिटिटिवनेस बढ़ती है। लेकिन वहां का एग्जाम प्रेशर भारत की मौजूदा प्रॉब्लम्स को और बढ़ा सकता है, जैसे कोचिंग सेंटर्स का बूम। इसके उलट, फिनलैंड का सिस्टम फ्लेक्सिबल है, जहां टीचर्स को फ्रीडम है क्यूरिकुलम डिजाइन करने की, कम टेस्टिंग और ज्यादा प्ले-बेस्ड लर्निंग से क्रिएटिविटी बढ़ती है। भारत ने 2022 से फिनलैंड मॉडल को एडॉप्ट करने की कोशिश की है, नेप 2020 में होलिस्टिक एजुकेशन पर फोकस के साथ। एक केस स्टडी दिखाती है कि फिनलैंड की फॉर्मेटिव असेसमेंट्स से एग्जाम प्रेशर कम हो सकता है, जबकि कोरिया जैसी हाई अचीवमेंट कल्चर से स्किल्स बिल्ड हो सकती हैं। लेकिन भारत की डाइवर्सिटी को देखें तो मिक्सड अप्रोच बेहतर: कोरिया से डिसेप्लिन लेकिन फिनलैंड से टीचर ट्रेनिंग और स्टूडेंट ऑटोनॉमी। 2025 की रिपोर्ट्स कहती हैं कि सिंगापुर और कोरिया जैसे मॉडल्स से भारत कॉम्पिटिटिव बन सकता है, लेकिन फिनलैंड से मेंटल हेल्थ प्रोटेक्शन। चैलेंज ये है कि भारत में टीचर क्वालिटी और इंफ्रास्ट्रक्चर कमजोर हैं, इसलिए रिफॉर्म को स्टेप बाय स्टेप लागू करना पड़ेगा। कुल मिलाकर, न तो पूरा कोरिया कॉपी करें न पूरा फिनलैंड; हाइब्रिड मॉडल जो इंडियन वैल्यूज से मैच करे। ये बदलाव से नई जनरेशन न सिर्फ स्मार्ट बल्कि बैलेंस्ड बनेगी, जो देश को टूली सक्सेसफुल बनाएगी।





## जगद्गुरु के शामिल होने से पदयात्रा को मिली आध्यात्मिक ऊँचाई



**स**नातन हिंदू एकता पदयात्रा इन दिनों दिल्ली से लेकर ब्रज क्षेत्र तक श्रद्धा, भक्ति और एकता का अद्भुत स्वरूप बनती जा रही है। छतरपुर के कात्यायनी मंदिर से शुरू हुई यह पदयात्रा जैसे-जैसे आगे बढ़ी, वैसे-वैसे इसमें शामिल होने वाले लोगों की संख्या लगातार बढ़ती गई। दिल्ली, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के अनेक कस्बों और गांवों से गुजरते हुए यात्रा का स्वरूप अब एक विशाल जनआंदोलन जैसा दिखाई देने लगा है।

इसी यात्रा के बीच एक महत्वपूर्ण और सुखद दृश्य उस समय देखने को मिला, जब जगद्गुरु महाब्रह्मर्षि श्री कुमार स्वामी जी ने बागेश्वर धाम पीठाधीश्वर धीरेन्द्र कृष्ण शास्त्री को अपना आशीर्वाद दिया और पदयात्रा में कदम मिलाते हुए कुछ समय साथ-साथ चले (उनके इस आगमन ने यात्रा की गंभीरता और आध्यात्मिक महत्ता, दोनों को एक नई अवस्था प्रदान की। मार्ग में उपस्थित श्रद्धालुओं ने दोनों संतों का स्वागत करते हुए इसे आध्यात्मिक ऊर्जा का संगम बताया। यात्रा के संचालकों का कहना है कि लगभग दो लाख से अधिक लोग अलग-अलग चरणों में पदयात्रा से जुड़े, जबकि इससे जुड़ी प्रवचन, जागरण और संदेश सभाओं के माध्यम से ये यात्रा कथित रूप से 5 करोड़ लोगों तक पहुंच सकती है। बड़ी संख्या में विभिन्न राज्यों के संत, समाजसेवी, कलाकार और कई प्रतिष्ठित व्यक्तित्व भी यात्रा का हिस्सा बने हैं, जिनमें युवाओं और परिवारों की भागीदारी विशेष रूप से देखी जा रही है।

जगद्गुरु कुमार स्वामी जी का आना यात्रा में शामिल लोगों के लिए किसी विशेष आध्यात्मिक आशीर्वाद से कम नहीं माना गया। उनकी उपस्थिति से वातावरण में एक अलग ही गंभीरता और श्रद्धा का भाव उभर आया। स्थानीय भक्तों का कहना था कि यात्रा पहले ही बड़े स्तर पर चर्चा में थी, लेकिन दो संतों का एक साथ चलना इस अभियान के संदेश को और अधिक सशक्त कर गया है। धीरेन्द्र कृष्ण शास्त्री ने भी जगद्गुरु के आगमन को अत्यंत शुभ और प्रेरणादायक बताते हुए कहा कि पदयात्रा का उद्देश्य केवल धर्म-जागरण नहीं, बल्कि समाज को एकता, सेवा और सद्भाव का संदेश देना है। ब्रज क्षेत्र से जुड़े कई लोगों ने यह भी बताया कि यात्रा के माध्यम से यमुना सफाई, गौ संरक्षण, ब्रज विरासत और सांस्कृतिक जागरूकता जैसे मुद्दों पर व्यापक चर्चा हो रही है। संतों का यह मानना है कि जब समाज आध्यात्मिक रूप से जागृत होता है, तभी ऐसे विषयों पर सार्थक पहल संभव होती है।

कुल मिलाकर, जगद्गुरु महाब्रह्मर्षि कुमार स्वामी जी और धीरेन्द्र कृष्ण शास्त्री का इस यात्रा में साथ आना इसे केवल धार्मिक आयोजन से आगे बढ़ाकर एक गहरे सामाजिक-आध्यात्मिक संदेश में बदल देता है। भक्तों का विश्वास है कि यह यात्रा आने वाले समय में सनातन समाज के बीच एकता और समरसता की नई भूमिका तैयार करेगी।

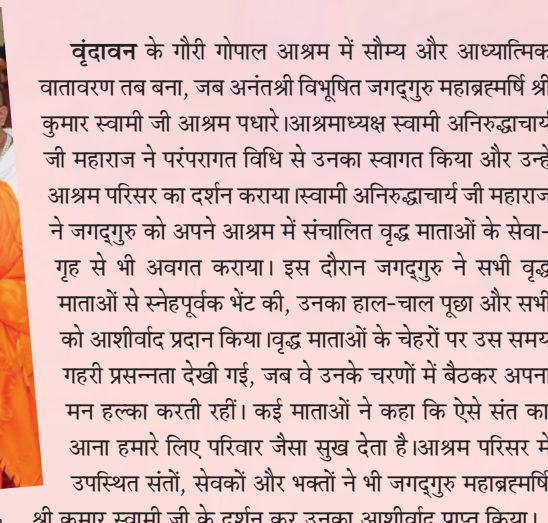


## गौरी गोपाल आश्रम पहुँचे जगद्गुरु महाब्रह्मर्षि श्री कुमार स्वामी जी स्वामी अनिरुद्धाचार्य जी महाराज ने किया जगद्गुरु का स्वागत



**वृंदावन** के गौरी गोपाल आश्रम में सौम्य और आध्यात्मिक वातावरण तब बना, जब अनंतश्री विभूषित जगद्गुरु महाब्रह्मर्षि श्री कुमार स्वामी जी आश्रम पहुंचे। आश्रमाध्यक्ष स्वामी अनिरुद्धाचार्य जी महाराज ने परंपरागत विधि से उनका स्वागत किया और उन्हें आश्रम परिसर का दर्शन कराया। स्वामी अनिरुद्धाचार्य जी महाराज ने जगद्गुरु को अपने आश्रम में संचालित वृद्ध माताओं के सेवा-गृह से भी अवगत कराया। इस दौरान जगद्गुरु ने सभी वृद्ध माताओं से स्नेहपूर्वक भेंट की, उनका हाल-चाल पूछा और सभी को आशीर्वाद प्रदान किया। वृद्ध माताओं के चेहरों पर उस समय गहरी प्रसन्नता देखी गई, जब वे उनके चरणों में बैठकर अपना मन हल्का करती रहीं। कई माताओं ने कहा कि ऐसे संत का आना हमारे लिए परिवार जैसा सुख देता है। आश्रम परिसर में उपस्थित संतों, सेवकों और भक्तों ने भी जगद्गुरु महाब्रह्मर्षि श्री कुमार स्वामी जी के दर्शन कर उनका आशीर्वाद प्राप्त किया।

जगद्गुरु ने इस अवसर पर सभी को उत्पन्ना एकादशी का लंगर प्रसाद भी वितरित किया। प्रसाद वितरण के दौरान वातावरण में भक्ति और सादगी का सुंदर संगम देखने को मिला। भक्तों का कहना था कि जगद्गुरु के हाथों से मिला प्रसाद उनके लिए अत्यंत शुभ और पुण्य फलदायी है। आश्रम के सेवकों ने बताया कि यह मुलाकात केवल औपचारिक नहीं थी, बल्कि संत-परंपरा की उस आत्मीयता का दर्शन कराती है जिसमें सेवा, करुणा और स्नेह प्रमुख आधार होते हैं। स्वामी अनिरुद्धाचार्य जी महाराज ने जगद्गुरु कुमार स्वामी जी के वृंदावन में जारी आध्यात्मिक अभियानों की सराहना की और उनके मंगलमय प्रवास की कामना की।





# लालू परिवार में भूचाल

## रोहिणी के आरोपों से बढ़ा टकराव, राबड़ी आवास खाली, RJD में खुला विद्रोह

किडनी देने वाली बेटी का दर्द फूटा, रोहिणी बोलीं- गंदी कहा, गाली दी, चप्पल उठाई गई, पार्टी कार्यकर्ता भी झुकने को तैयार नहीं

@ रिकू विश्वकर्मा

बिहार की सियासत इन दिनों चुनावी नतीजों से ज्यादा लालू प्रसाद यादव के परिवार में चल रही कलह से गरमाई है। किडनी देने वाली बेटी रोहिणी आचार्य ने एक के बाद एक तीखे आरोप लगाकर न केवल अपने भाई तेजस्वी यादव बल्कि उनके करीबी संजय यादव को सीधे निशाने पर ले लिया है। मामला इतना बढ़ गया कि राबड़ी आवास के बाहर तक नारेबाजी होने लगी और तीन बहनों ने पटना छोड़कर दिल्ली का रुख कर लिया। राजनीति छोड़ने, परिवार से नाता तोड़ने और खुद को अनाथ कहने तक की नौबत आ गई है। माहौल इतना खराब है कि रोहिणी का कहना है कि भगवान न करे किसी के घर में मेरे जैसी बेटी हो।

### बेटा भाग गया, मुझे गंदी कहा गया

ताजा विवाद तब और बढ़ गया जब रोहिणी आचार्य ने एक वीडियो साझा किया जिसमें वह बिहार के एक पत्रकार से बात कर रही हैं। वह कहती हैं कि जब किडनी देने की बात आई, तो बेटा भाग गया इसके साथ ही उन्होंने पोस्ट लिखा कि जो लोग लालू जी के नाम पर राजनीति करते हैं, वो झूठी हमदर्दी दिखाना छोड़ें और उन गरीबों को किडनी दे जो अस्पतालों में अपनी आखिरी सांसें गिन रहे हैं। लालू जी के नाम पर महादान करना है तो आगे आएँ पिता को किडनी देने वाली शादीशुदा बेटी को गलत बताने वाले सामने आकर खुले मंच पर बात करें। जो मेरी किडनी को गंदी कहते हैं, पहले खुद किसी जरूरतमंद को किडनी देकर दिखाएं। एक बातल खून देने में जिनका खून सूख जाता है, वे किडनी पर उपदेश देते हैं?

### राबड़ी आवास के बाहर हंगामा

आम तौर पर लालू परिवार के मामलों पर चुप रहने वाले RJD कार्यकर्ताओं ने भी बड़ा कदम उठाया। राबड़ी आवास के बाहर कार्यकर्ता रोहिणी के समर्थन में जमा हुए। संजय यादव के खिलाफ नारे लगे, "संजय यादव हरियाणा जाओ।" ये वही संजय यादव हैं जिन्हें तेजस्वी का सुपर सलाहकार कहा जाता है। कार्यकर्ताओं का आरोप है कि वही परिवार में कलह की वजह हैं।

### तेजप्रताप का भी फूटा गुस्सा

तेजप्रताप यादव ने भी इस विवाद पर सोशल मीडिया पर लिखा कि मेरे अपमान तक ठीक था, लेकिन बहन का अपमान नहीं सहेंगे। जयचंदों को जनता सबक सिखाएगी। राजद में जयचंद कहना सीधा-सीधा संजय यादव पर निशाना माना जा रहा है।

### चुनाव में करारी हार और परिवार में खींचतान

बिहार विधानसभा चुनाव के नतीजों के बाद लालू परिवार में उबाल और तेज हो गया है। इस बार RJD को महज 25 सीटें मिलीं जबकि 2020 में यही संख्या 75



थी। हार के बाद आरोप-प्रत्यारोप तेज हो गए। रोहिणी ने तो साफ कहा कि पार्टी का ऐसा हाल क्यों हुआ, इसका जवाब उन्हें देना चाहिए, पर जिम्मेदारी नहीं ले रहे। रोहिणी के राबड़ी आवास छोड़ने के बाद तीनों बहनें-रागिनी, राजलक्ष्मी और चंदा यादव भी दिल्ली चली गईं और पटना का राबड़ी आवास खाली हो गया।

### 'मुझे मारने के लिए चप्पल उठी'

दिल्ली पहुंचकर रोहिणी ने मीडिया से खुलकर कहा कि चप्पल वाली बात सही है। मेरे माता-पिता रो रहे थे। भगवान न करे किसी के घर में मेरी जैसी बेटी हो। उन्होंने कहा कि मैं ससुराल जा रही हूँ। मेरी सास भी रो रही हैं। भाई हैं तो योगदान उनका भी होना चाहिए। क्या सब कुछ बेटियों को ही करना होगा? उनकी बातों से स्पष्ट था कि चोट गहरी है।

### "मेरा मायका छीन लिया गया, मुझे अनाथ बनाया गया"

रविवार सुबह एक पोस्ट में रोहिणी ने लिखा कि मुझे मेरा मायका छुड़वाया गया। मुझे अनाथ बनाया गया। मैंने रोते-रोते घर छोड़ा। मुझे चप्पल से मारने की कोशिश

हुई। उन्होंने फेसबुक पर लालू को किडनी देने के वीडियो और फोटो पिन कर दिए। दूसरी पोस्ट में उन्होंने लिखा कि मुझे गालियाँ दीं, कहा कि मैंने अपने पिता को 'गंदी किडनी' लगाई। करोड़ों लिए। टिकट लिया। शादीशुदा बेटी की किडनी को गंदा बताया गया। उनका आरोप था कि उनसे पूछा गया कि जब भाई हैं तो बेटी क्यों किडनी दे? इसके जवाब में रोहिणी ने लिखा कि सभी बेटियों से कहूँगी कि अपने परिवार, अपने बच्चों को देखें। मायके की जिम्मेदारी न लें। जो मैंने किया, वो मत करना। मेरी गलती मत दोहराना।

### तेजस्वी के सलाहकार संजय यादव विवाद के केंद्र में क्यों हैं?

लालू परिवार में संजय यादव को लेकर नाराजगी नई नहीं है। 118 सितंबर को रोहिणी ने एक पोस्ट शेयर की थी जिसमें सवाल उठाया गया था कि तेजस्वी यादव की गाड़ी की फ्रंट सीट पर संजय क्यों बैठे हैं? यह बात परिवार के कई लोगों को चुभी। अगले ही दिन रोहिणी ने X पर पार्टी और परिवार के सभी सदस्यों को अनफॉलो कर दिया। यहीं से विवाद शुरू हुआ जो अब विस्फोट में बदल गया है। माना जाता है कि तेजस्वी के विधानसभा

चुनावों में फैसले, रणनीति, बयानों, सब पर संजय यादव का सबसे ज्यादा नियंत्रण है। कई नेताओं का मानना है कि परिवार में दूरी बढ़ने की असल वजह यही है।

### संजय और रमीज ने कहा कि राजनीति छोड़ें

शनिवार रात रोहिणी ने X पर लिखा कि मैं राजनीति छोड़ रही हूँ और परिवार से नाता तोड़ रही हूँ। संजय यादव और रमीज ने कहा था, और मैं सारा दोष अपने ऊपर ले रही हूँ। यह वही रमीज हैं जिन पर हत्या समेत कई गंभीर मुकदमे हैं और जो RJD की सोशल मीडिया और जमीन स्तर की चुनावी रणनीति देखते हैं। दूसरी तरफ तेजप्रताप की नाराजगी पुरानी है।

तेजप्रताप पहले भी संजय यादव को निशाने पर लेते रहे हैं। उन्होंने कई बार कहा कि जयचंदों ने RJD को खोखला कर दिया है। लोग इसे संजय यादव के लिए सीधा संदेश मानते हैं। लालू प्रसाद के पुराने सहयोगी शिवानंद तिवारी ने भी हार के लिए पिता और पुत्र दोनों को जिम्मेदार ठहराया। उनका कहना है कि लालू धृतराष्ट्र की तरह बेटे के लिए गद्दी गर्म कर रहे थे। तेजस्वी सपनों में मुख्यमंत्री पद की शपथ ले रहे थे। मैंने उन्हें सलाह दी थी कि निर्वाचन सूची के खिलाफ सड़क पर उतरें। संघर्ष करें। पुलिस की मार खाएं। पर तेजस्वी ने ऐसा नहीं किया। और परिणाम सामने है।

### राबड़ी आवास खाली, परिवार के भीतर लंबी दूरी

तीन बेटियों का दिल्ली जाना, रोहिणी का पटना छोड़ना, कार्यकर्ताओं का सड़कों पर उतरना और तेजप्रताप का खुला विरोध, इससे साफ है कि लालू परिवार अब दो खेमों में बंटता दिख रहा है। राबड़ी आवास, जहां कभी राजनीतिक रणनीतियां बनती थीं, इन दिनों पूरी तरह खाली है। क्या यह मतभेद चुनावी हार का असर है या परिवार की पुरानी खटास? विशेषज्ञ मानते हैं कि यह विवाद अचानक नहीं है। लंबे समय से लालू परिवार में सत्ता, फैसलों और रणनीति को लेकर अंदरूनी असहमति चल रही थी। किडनी वाले मुद्दे ने इसे भावनात्मक बना दिया और परिवार का हर सदस्य इसमें खिंचता चला गया।

### पार्टी बचेगी कैसे?

RJD की हालत चुनावी हार के बाद पहले ही कमजोर थी, ऊपर से परिवार की लड़ाई ने कार्यकर्ताओं में भ्रम पैदा कर दिया है। सूत्र बताते हैं कि कई पुराने नेता पार्टी छोड़ने के मूड में हैं क्योंकि उन्हें लगता है कि फैसले अब पार्टी नेतृत्व नहीं, कुछ सलाहकार ले रहे हैं। रोहिणी के आरोप निजी भी हैं और राजनीतिक भी।

किडनी देने जैसी संवेदनशील घटना को लेकर जो शब्द और आरोप लगे, उन्होंने इस विवाद को और गहरा कर दिया है। लालू प्रसाद यादव की राजनीति हमेशा परिवार-केन्द्रित कही जाती रही है, लेकिन इस बार उसी परिवार में सबसे बड़ा तूफान है।



# सोनभद्र की धरती दहली, 70 टन चट्टान के नीचे दबे मजदूर रेस्क्यू जारी, सियासत से लेकर सिस्टम तक पर उठे सवाल

@ अभिषेक चौबे

**सो**नभद्र जिले के ओबरा थाना क्षेत्र में शनिवार शाम हुआ खदान हादसा पूरे प्रदेश को झकझोर गया। बिल्ली मारकुंडी खनन क्षेत्र स्थित कृष्णा माइनिंग वर्क्स की खदान में अचानक पहाड़ी का एक बड़ा हिस्सा टूटकर गिर गया। भारी-भरकम चट्टानों के नीचे काम कर रहे मजदूरों पर टूट पड़ी। कई मजदूर वहीं दब गए। हादसे के बाद से ही एनडीआरएफ, एसडीआरएफ, जिला प्रशासन और पुलिस की संयुक्त टीमों रेस्क्यू में जुटी हुई हैं। रविवार तक मलबे से पांच शव निकाले जा चुके हैं। इनमें से चार की पहचान हो चुकी है, जबकि एक की पहचान अब भी नहीं हो सकी है। प्रशासन का दावा है कि अब और शवों की संभावना कम है, लेकिन मलबा इतना भारी है कि खुदाई अभी रोकना संभव नहीं। पहाड़ी से गिरी चट्टान का वजन लगभग 70 से 75 टन बताया जा रहा है। यही वजह है कि रेस्क्यू धीरे और बेहद सावधानी से चल रहा है।

## हादसा कैसे हुआ?

शनिवार शाम साढ़े चार बजे ओबरा पुलिस को सूचना मिली कि बिल्ली मारकुंडी स्थित खदान में एक बड़ा हिस्सा दरक गया है। मजदूर रोज की तरह काम कर रहे थे। अचानक जोरदार आवाज हुई और देखते ही देखते पहाड़ी टूटकर नीचे आ गई। मजदूरों को संभलने तक का मौका नहीं मिल पाया। जिलाधिकारी चंद्र विजय सिंह के मुताबिक, पहाड़ी से टूटकर आई चट्टानें इतनी विशाल थीं कि मशीनरी को भी कई बार रोकना पड़ा। प्रशासन ने तुरंत राहत-बचाव दलों को मौके पर भेजा। रातभर मलबा हटाने का काम चलता रहा।

## 70 टन चट्टान, मुश्किल बना रेस्क्यू

रेस्क्यू ऑपरेशन की सबसे बड़ी चुनौती वही चट्टानें हैं, जिन्होंने मजदूरों की जान ले ली। एडीजी वाराणसी जोन पीयूष मोडिया ने बताया कि पहाड़ी से गिरे पत्थर बेहद बड़े आकार के हैं। अगर उन्हें जल्दबाजी में हटाया गया तो किसी भी समय हालत और बिगड़ सकती है। इसलिए मशीनों धीरे-धीरे और पूरी सावधानी के साथ काम कर रही हैं रेस्क्यू में जेसीबी, पोकलैन, क्रेन जैसी भारी मशीनें लगाई गई हैं। एनडीआरएफ और एसडीआरएफ की टीमों लगातार हर परत को हटाकर खोज कर रही हैं। अब तक पांच शव बाहर निकाले जा चुके हैं। रविवार सुबह मिले शव की पहचान पनारी गांव के 30 वर्षीय राजू सिंह के रूप में हुई है।

## कितने मजदूर दबे, अब भी साफ नहीं

हादसे की सबसे बड़ी उलझन यही है कि मलबे के नीचे कितने मजदूर दबे थे, इसका स्पष्ट आंकड़ा किसी के पास नहीं। जिलाधिकारी और पुलिस अधीक्षक दोनों का कहना है कि मौके पर मौजूद लोगों के अनुसार करीब 10 से 12 मजदूर वहां मौजूद थे, लेकिन इसका कोई



लोग दबे थे और कितनों को बाहर निकाला जा सका।

## पीड़ित परिवारों की आंखों में उम्मीद और डर

हादसे के बाद खदान के बाहर जमा परिजन रातभर वहीं डटे रहे। किसी को उम्मीद थी कि कोई चमत्कार हो जाएगा और उनका अपना जीवित मिल जाएगा। किसी की आंखों में सिर्फ डर और बेचैनी थी। हर बार जब मशीनें रुकतीं, परिजन घबरा जाते कि कहीं रेस्क्यू रोक तो नहीं दिया गया। स्थानीय ग्रामीणों का कहना है कि खदान में सुरक्षा के नाम पर कुछ नहीं था। कई बार मजदूरों ने असुरक्षित खनन का विरोध किया, लेकिन मालिकान ने कोई व्यवस्था नहीं की। ग्रामीणों ने मांग की है कि इस हादसे के जिम्मेदार लोगों पर सख्त कार्रवाई की जाए।

## हादसे के बाद सियासत भी तेज

हादसे के बाद राजनीतिक बयान भी शुरू हो गए हैं। सपा और भाजपा नेता एक-दूसरे पर आरोप लगा रहे हैं। सपा की ओर से अवैध खनन को जिम्मेदार ठहराया जा रहा है, वहीं भाजपा नेताओं का कहना है कि रेस्क्यू पर राजनीति नहीं होनी चाहिए और सबसे पहले प्राथमिकता पीड़ितों की मदद है।

स्थानीय प्रशासन ने हालांकि आश्वासन दिया है कि किसी भी जिम्मेदार व्यक्ति को छोड़ा नहीं जाएगा और पूरे मामले की जांच की जाएगी। सोनभद्र और आसपास के क्षेत्रों में खनन से जुड़े हादसे पहले भी होते रहे हैं। विशेषज्ञों का कहना है कि सुरक्षा मानकों का पालन न करना, अधिक खनन के दबाव में नियमों की अनदेखी और जमीन की स्थिरता का ठीक से परीक्षण न होना ऐसे हादसों को जन्म देता है।

आधिकारिक रिकॉर्ड उपलब्ध नहीं है। स्थानीय विधायक और समाज कल्याण राज्य मंत्री संजीव कुमार गोंड ने घटनास्थल का निरीक्षण करने के बाद कहा कि मौके पर मौजूद लोगों के बयान एक जैसे नहीं हैं। उन्होंने कहा कि अनुमान लगाना मुश्किल है, लेकिन प्रशासन हर संभावना को ध्यान में रखकर रेस्क्यू कर रहा है।

## अवैध खनन पर उठा बड़ा सवाल

सपा सांसद छोटेलाल खरवार ने दावा किया कि यह हादसा अवैध खनन का नतीजा है। उनका कहना है कि इलाके में माफियाओं द्वारा खनन नियमों की धज्जियां

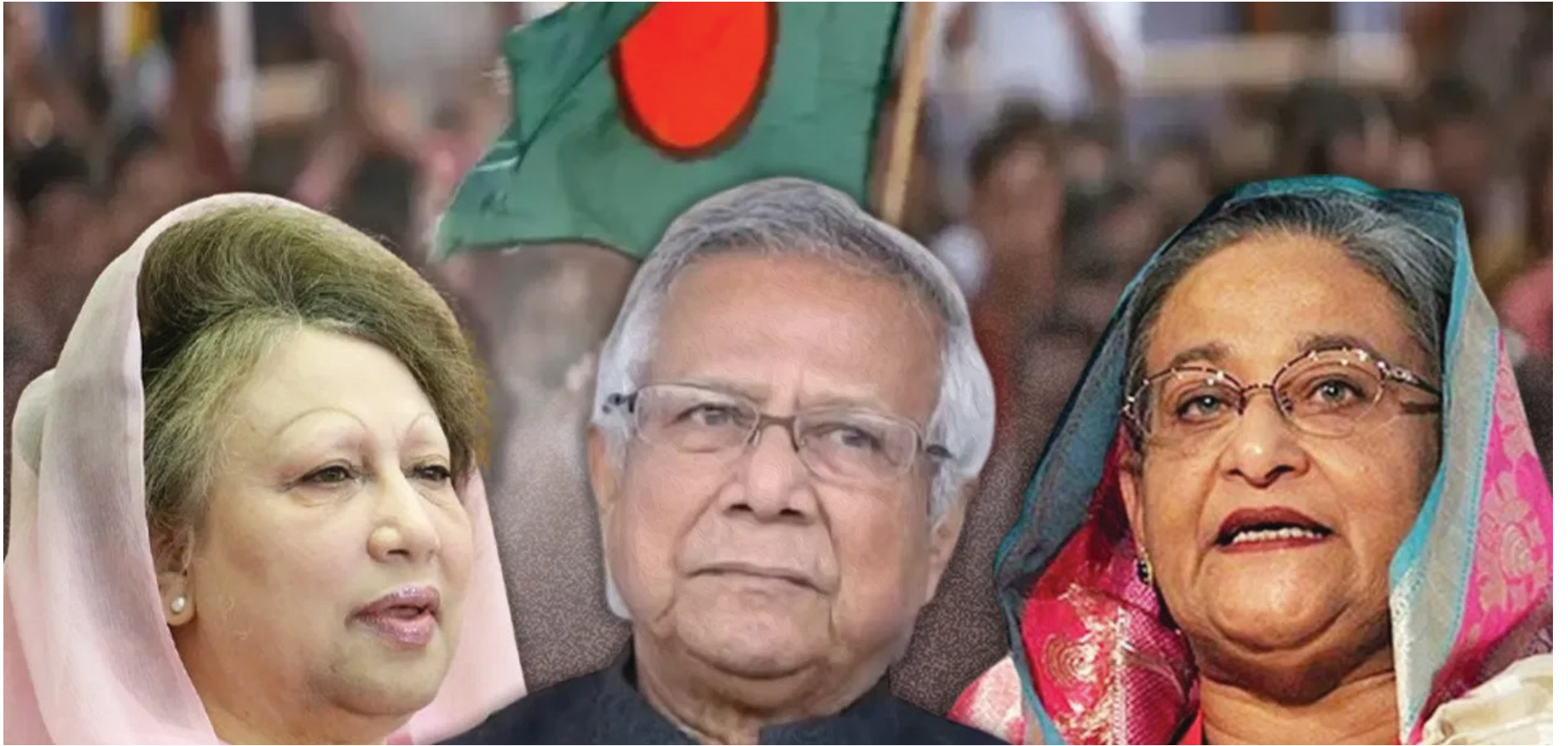
उड़ाई जा रही थीं और प्रशासन ने आंखें मूंद रखी थीं। उन्होंने पीड़ित परिवारों को 50 लाख रुपये मुआवजा और प्रत्येक परिवार के एक सदस्य को सरकारी नौकरी देने की मांग की। पुलिस ने भी इस मामले में अवैध खनन की आशंका को देखते हुए भारतीय न्याय संहिता (BNS) की संबंधित धाराओं के तहत एफआईआर दर्ज कर ली है। ओबरा पुलिस आरोपियों की तलाश में जुटी है।

## प्रशासन की दलील और कार्रवाई

सोनभद्र के एसपी अभिषेक वर्मा ने बताया कि खदान में काम कर रहे मजदूरों की सुरक्षा सुनिश्चित करने की जिम्मेदारी संचालक की थी। हादसे के बाद मौके से कुछ लोग फरार हो गए। उनकी तलाश के लिए विशेष टीम बनाई गई है। जिलाधिकारी चंद्र विजय सिंह ने कहा कि राहत-बचाव कार्य पूरी संवेदनशीलता के साथ किया जा रहा है। भारी चट्टानें हटाने में समय लग रहा है, लेकिन टीम लगातार लगी हुई है। उन्होंने कहा कि स्थिति स्पष्ट होने के बाद ही यह बताया जा सकेगा कि कुल कितने



# बांग्लादेश में बड़ा राजनीतिक बदलाव फरवरी में चुनाव और जनमत संग्रह एक साथ



@ आनंद मीणा

**बां**ग्लादेश अगले साल फरवरी में एक साथ दो महत्वपूर्ण प्रक्रियाओं से गुजरेगा। अंतरिम सरकार ने घोषणा की है कि देश में संसदीय चुनाव और जनमत संग्रह एक ही दिन कराए जाएंगे। यह फैसला ऐसे समय में लिया गया है, जब देश की राजनीति नई दिशा की तलाश में है और जनता को पहली बार कुछ बड़े संवैधानिक सवालों पर सीधे राय देने का मौका मिल रहा है। प्रधानमंत्री मोहम्मद युनूस ने गुरुवार को इसकी आधिकारिक घोषणा की और कहा कि चुनाव निष्पक्ष, पारदर्शी और सभी को साथ लेकर कराए जाएंगे। प्रधानमंत्री युनूस ने सभी राजनीतिक दलों से यह भी अपील की कि वे अपने-अपने घोषणापत्र में युवाओं और महिलाओं को प्राथमिकता दें, क्योंकि देश का भविष्य इन्हीं वर्गों पर निर्भर है।

## बांग्लादेश की शासन संरचना बदलने का प्रस्ताव

जनमत संग्रह जिस दस्तावेज़ पर आधारित होगा, वह है जुलाई चार्टर-एक 26 बिंदुओं वाला विस्तृत प्रस्ताव, जिसमें देश की पूरी शासन व्यवस्था को नए सिरे से देखने की बात की गई है। इसमें तीन मुख्य स्तंभ-संसद, न्यायपालिका और कार्यपालिका के बीच शक्ति संतुलन कैसे हो, इसके लिए नई व्यवस्था सुझाई गई है।

### चार्टर की प्रमुख बातें

प्रधानमंत्री के लिए दो कार्यकाल की सीमा का प्रस्ताव।

संविधान में ऐसे संशोधनों की मांग, जो सत्ता के

अत्यधिक केंद्रीकरण को रोक सकें।

न्यायपालिका की स्वतंत्रता को मजबूत करने की सलाह।

संसद की जवाबदेही बढ़ाने के सुझाव।

यह चार्टर 1972 के संविधान की कई धारणाओं की आलोचना करता है। 1972 का वही संविधान था, जो बांग्लादेश की आजादी के बाद भारत की मदद से तैयार हुआ था। इसी वजह से यह नई बहस भारत के लिए भी महत्वपूर्ण बन जाती है।

### क्या 1972 का योगदान कमजोर होगा?

बांग्लादेश में भारत की पूर्व हाई कमिश्नर रेवा दास ने जुलाई चार्टर को लेकर चिंता जताई है। उनका कहना है कि 1972 के संविधान पर सीधी आलोचना का मतलब है कि बांग्लादेश की आजादी में भारत की भूमिका के ऐतिहासिक महत्व को चुनौती दी जा सकती है। उनका मानना है कि यह मामला सिर्फ संवैधानिक सुधारों का नहीं है, बल्कि उस राजनीतिक सोच का भी है, जिसमें पुराने सहयोगियों के योगदान को नई परिभाषा दी जा रही है। भारत और बांग्लादेश के रिश्ते दशकों से स्थिर रहे हैं, लेकिन इस बदलाव से दोनों देशों के कूटनीतिक समीकरण पर असर पड़ सकता है।

### जनमत संग्रह में क्या पूछा जाएगा?

सरकार ने जनमत संग्रह के लिए चार सवाल तय किए हैं। वोटर्स से इन सवालों के ज़रिए पूछा जाएगा कि वे जुलाई चार्टर में प्रस्तावित सुधारों को किस हद तक स्वीकार करते हैं। जनमत संग्रह का उद्देश्य जनता को सीधे संविधान निर्माण और सुधार की प्रक्रिया में शामिल करना है। इसके बाद एक सुधार परिषद बनाई जाएगी, जो जनमत

के आधार पर संविधान में ज़रूरी बदलाव करेगी। यह बांग्लादेश के इतिहास में एक बड़ा कदम माना जा रहा है, क्योंकि पहली बार देश की जनता शासन प्रणाली के इतने महत्वपूर्ण सवालों पर सीधा फैसला करेगी।

### शेख हसीना के खिलाफ फैसले की तारीख तय



एक तरफ बांग्लादेश फरवरी में चुनाव और जनमत संग्रह की तैयारी कर रहा है, वहीं दूसरी ओर न्यायिक मोर्चे पर भी बड़ा घटनाक्रम हुआ है। इंटरनेशनल क्राइम्स ट्रिब्यूनल ने गुरुवार को घोषणा की है कि पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना के खिलाफ मानवता के खिलाफ अपराध वाले मामले में 17 नवंबर को फैसला सुनाया जाएगा। यह मामला काफी समय से चल रहा था और बांग्लादेश की राजनीति और सत्ता संरचना पर इसका बड़ा प्रभाव पड़ सकता है। हसीना के समर्थक इसे राजनीतिक प्रेरित मामला

मानते हैं, जबकि विपक्ष का कहना है कि यह न्याय के दरवाजे पर रखी गई देर से आई दस्तक है। फैसले के नतीजे से देश की राजनीतिक हवा और तेज़ी से बदल सकती है।

### क्यों बढ़ी राजनीतिक गतिविधि?

बांग्लादेश की राजनीति पिछले कुछ सालों से उथल-पुथल में है। शेख हसीना के लंबे शासनकाल और विपक्ष पर लगातार कार्रवाई को लेकर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी सवाल उठते रहे हैं। जुलाई चार्टर उसी पृष्ठभूमि में आया है, जिसमें शासन की लंबी परंपराओं और सत्ता के केंद्रीकरण पर गंभीर सवाल उठाए गए हैं।

### फरवरी का चुनाव क्यों महत्वपूर्ण होगा?

आगामी संसदीय चुनाव कई मायनों में ऐतिहासिक होंगे। देश पहली बार लोकतांत्रिक ढांचे पर जनता का सीधा हस्ताक्षर ले रहा है। सत्ता संरचना और राजनीतिक प्रणाली दोनों बदल सकती हैं। प्रमुख नेताओं पर चल रहे मुकदमों और फैसलों से चुनावी हवा में भारी उतार-चढ़ाव संभव है। यह चुनाव केवल प्रतिनिधि चुनने की प्रक्रिया नहीं होगा, बल्कि यह इस बात का संकेत भी देगा कि बांग्लादेश अपनी राजनीतिक दिशा किस तरफ मोड़ना चाहता है। फरवरी आते-आते राजनीतिक तापमान तेज़ी से बढ़ने वाला है। जनता के सामने दो बड़े फैसले होंगे-एक, नए सांसदों का चुनाव। दूसरा, देश के संवैधानिक ढांचे पर अपनी राय देना। यह स्पष्ट है कि बांग्लादेश एक बड़े बदलाव के मुहाने पर खड़ा है। जनमत संग्रह का परिणाम देश के भविष्य के प्रशासनिक ढांचे को तय करेगा, जबकि संसदीय चुनाव यह बताएंगे कि बांग्लादेश किस नेतृत्व पर भरोसा करना चाहता है।



# टाला का पुल

टाला का पुल कई दशकों से	शब्दों की सक्रियता को बनाए रखना दशकों तक	बचाए रखता है असंख्य सहेमतियों	काश हम पुराने पुल से कुछ ले पाते
चुपचाप ढो रहा है हम सबको	और आज निःशब्द खड़ा है	और कई बार घोर असहेमतियों के बीच भी	ले पाते धैर्य मजबूती
यानी सिटी आफ ज्वाँय	आपने देखा! टाला के पुल को	थामे रखता है संबंधों की डोर	अपनत्व प्रतिबद्धता
की आबादी को पता है	कुछ सीखा कैसे की जाती है मध्यस्थता?	यह थामे रखता है रिश्तों की मिठास को	और सबसे आखिर में उस पार सुरक्षित पहुँचने का
इस पुल से लेकर लोग बढ़ते हैं मंजिल की ओर	कैसे बिछा देता है वह खुद को रास्ता बन	इन दिनों ढराया जा रहा है इसे	भरोसा इसलिए अलविदा ना कहेंगे
यह पुल दो किनारों को जोड़ने	संवाद का यह टाला का पुल	यह दौर पुलों के टूटने का है	टाला का पुल तुम्हें तुम्हारी भावना को रोपेंगे यहाँ
और रिश्तों को बनाए रखता है	महज एक माध्यम नहीं है यह है	पुराने धीरे-धीरे जर्जर हो गए हैं	ताकि बचा रहे संवाद बची रहे एक-दूसरे से मिलने की संस्कृति
खुद को झुकाकर दो बार-बार	हमारी जाति के असंख्य दुखों और पीड़ाओं का वारक	इन दिनों जो नए पुल बन रहे हैं	बचा रहे प्रेम तुम्हारी तरह
थामता है रिश्तों की डोर	यह कई भाषाओं और बोलियों का भी पुल है	वे बहुत कमजोर हैं मिलावटी और संवेदन शून्य	सबकुछ ढोते-ढोते बचा रहे
कई पीढ़ियों के बीच के तार को संवादों का यह पुल	जो शब्दों की सक्रियता को बचाए रखता है	इसलिए जल्दी टूट रहे हैं आजकल के रिश्तों की तरह	आदमी को आदमियत से जोड़ने का संस्कार इसलिए
			तुम्हें अलविदा ना कहेंगे टाला का पुल

गाय अब  
सिर्फ पालतू पशु नहीं

अब वह  
एक राजनैतिक हथियार है

जिसका हिंसात्मक प्रयोग  
होता है चुनावों में

सांप्रदायिकता फैलाने में  
अपने विरोधियों को धूल चटाने में

हिंदू-मुस्लिम को लड़ने-लड़ाने में  
आज मैंने देखा उसे

सड़क पर घूम रही थी  
हाँ वहीं चार पैरों वाली

पालतू गाय  
वह निगल रही थी

सड़कों पर फेंकी  
फल और सब्जियाँ

कभी -कभी  
पालीथीन में फेंकी जूठन में फंसी  
दिखी गाय

अब बहुत कम  
बची है हरियाली

गाय के लिए  
विकास पुत्र ने छीन लिया है इनसे

## बचाना होगा

घास का मैदान और पोखर  
जैसे बच्चों से छिन लिए गए खिलौने

खेल के मैदान पाट दिए गए  
अब वे इंडोर हो गए

बचपन ने थाम लिया गैजेट  
दादा दादी, नाना-नानी की कहानियाँ  
खो गई

बच्चों की शिशुता की जगह  
इंस्टॉल हो गई है धूर्तता

ठीक वैसे ही  
जैसे कारपोरेट घरानों ने

गौशालों पर चला दिया हो बुलडोजर  
लगता है

कुछ भी नहीं बचा अब  
इस दुनिया में

नहीं बचा बच्चों के लिए  
शरारतें

मैदान  
कहानियाँ

बड़े और बड़े  
नहीं बचा मवेशियों के लिए

चारा  
पानी

और हरियाली  
इस अकाल बेला में

बचाना होगा हमें  
हरे-भरे मैदान

खिलौने  
हँसी

और सबसे अंत  
कृत्रिमता के बदले

जीवन की समरसता

**मधु सिंह**

नई पीढ़ी की कवयित्री।



@ अर्पित शुक्ला

**देश** में सोना-चांदी खरीदने वालों के लिए सोमवार की सुबह राहत लेकर आई। कीमती धातुओं के दाम लगातार तीसरे कारोबारी दिन गिरावट के साथ बंद हुए हैं।

इंडिया बुलियन एंड ज्वेलर्स एसोसिएशन (IBJA) के मुताबिक 18 नवंबर को सोने और चांदी दोनों की कीमतों में तेज गिरावट दर्ज की गई। बाजार विशेषज्ञ इस गिरावट को अंतरराष्ट्रीय संकेतों और घरेलू बाजार में कमजोर मांग से जुड़ा मान रहे हैं।

**सोना 744 रुपए सस्ता, तीन दिनों में 4,374 रुपए की गिरावट**

सोमवार को 10 ग्राम सोने की कीमत 744 रुपए गिर गई। अब यह 1,22,180 रुपए प्रति 10 ग्राम पर आ गया है। इससे पहले वही सोना 1,22,924 रुपए में मिल रहा था। IBJA के आंकड़े बताते हैं कि पिछले तीन कारोबारी दिनों में सोना कुल 4,374 रुपए सस्ता हो चुका है। 13 नवंबर को सोना 1,26,554 रुपए पर था। शुक्रवार और सोमवार को भी गिरावट जारी रही। शनिवार और रविवार को बाजार बंद रहने के बाद सप्ताह की शुरुआत भी सोना खरीददारों के लिए राहतभरी रही।

**चांदी 1,227 रुपए टूटी, तीन दिनों में 9,024 रुपए की गिरावट**

सोने की तरह चांदी भी लगातार नीचे जा रही है। सोमवार को चांदी 1,227 रुपए घटकर 1,53,706 रुपए प्रति किलो पर पहुंच गई। इससे पहले यह 1,54,933 रुपए प्रति किलो पर थी।

पिछले तीन कारोबारी दिनों में चांदी की कीमत में 9,024 रुपए की भारी गिरावट आई है। गुरुवार को इसकी कीमत 1,62,730 रुपए प्रति किलो थी। इस तरह चांदी का बाजार भी तेज उतार-चढ़ाव से गुजर रहा है। आइये समझते हैं कि क्यों आ रही है गिरावट।

**ग्लोबल टेंशन में कमी**

सोना-चांदी को दुनिया भर में 'सेफ-हेवन' माना जाता है। यानी युद्ध, आर्थिक संकट या भू-राजनीतिक तनाव बढ़ने पर लोग सुरक्षित निवेश के तौर पर इन्हें खरीदते हैं। पिछले कुछ दिनों में अंतरराष्ट्रीय माहौल थोड़ा स्थिर हुआ है, जिससे निवेशकों का रुझान जोखिम भरे एसेट्स की ओर बढ़ा है। इसका असर सीधे सोने-चांदी पर पड़ा और कीमतें नीचे आईं।

**प्रॉफिट बुकिंग और ओवरबॉट जोन**

पिछले कुछ हफ्तों से सोने-चांदी में लगातार तेजी बनी हुई थी। कई निवेशकों ने ऊंचे दाम पर खरीद की थी, जो अब मुनाफा वसूली कर रहे हैं।

तकनीकी संकेतक (जैसे RSI) दिखा रहे थे कि कीमतें ओवरबॉट जोन में पहुंच चुकी थीं। यानी दाम अपनी वास्तविक कीमत से ज्यादा बढ़ गए थे।

इस स्थिति में डीलर्स और ट्रेडर्स बिकवाली शुरू कर देते हैं, जिससे बाजार में तेज गिरावट आती है।

**डॉलर और बॉन्ड यील्ड का असर**

हालांकि यह कारक सीधे पहले की तरह भारी असर नहीं डाल रहा, लेकिन डॉलर की मजबूती और बॉन्ड यील्ड में हलचल सोने पर हमेशा दबाव डालती है। जब डॉलर मजबूत होता है, तब सोने में निवेश कम होता है, क्योंकि सोना डॉलर में ही खरीदा जाता है।

# फिर सस्ते हुए

## सोना-चांदी



## जानिए कितने लुढ़के भाव और क्या है इसके पीछे की वजह

**IBJA के रेट और बाजार की कीमतों में फर्क क्यों होता है**

IBJA की कीमतों को भारतीय बाजार में सबसे विश्वसनीय माना जाता है। हालांकि इनमें 3% GST, मैकिंग चार्ज और ज्वेलर्स का मार्जिन शामिल नहीं होता।

इसी कारण दुकानों में सोना IBJA की तुलना में हमेशा थोड़ा महंगा मिलता है। यही रेट RBI के सोवरेन गोल्ड बॉन्ड और कई बैंक गोल्ड लोन के लिए भी मानते हैं। इसलिए जिन लोगों को गोल्ड लोन या निवेश की योजना बनानी है, वे हमेशा IBJA की कीमतों पर नज़र रखते हैं। इस साल सोना 46,018 रुपए और चांदी 67,689 रुपए महंगी हुई। गिरावट के बावजूद 2024 सोने-चांदी के लिए अब तक शानदार रहा है। 31 दिसंबर 2024 को 10 ग्राम 24 कैरेट सोना 76,162 रुपए में मिलता था। अब यह 1,22,180 रुपए पर पहुंच गया है। यानी 11 महीने में सोने की कीमत

में 46,018 रुपए की बढ़ोतरी हुई। एक किलो चांदी 31 दिसंबर 2024 को 86,017 रुपए की थी। अब इसका भाव 1,53,706 रुपए प्रति किलो है। इस हिसाब से चांदी में 67,689 रुपए का उछाल आया है। सोने की तुलना में चांदी की बढ़त कहीं ज्यादा रही है। यह दर्शाता है कि 2024

में चांदी में निवेश करने वालों को बढ़िया रिटर्न मिला।

**क्या आगे और गिरेगा सोना या फिर बढ़ेगा?**

विशेषज्ञों का अनुमान है कि आने वाले कुछ हफ्तों में सोने की कीमतों में उतार-चढ़ाव बना रहेगा। हालांकि शादी का सीजन शुरू हो गया है, जिससे सोने की मांग बढ़ेगी और कीमत को मजबूती मिल सकती है। कुछ विश्लेषकों का मानना है कि दिसंबर के अंत तक सोना फिर से 1.25 लाख रुपए प्रति 10 ग्राम तक जा सकता है। यह बहुत बाजार की मांग, डॉलर की स्थिति और अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियों पर निर्भर करेगी। सोना-चांदी की कीमतों में गिरावट फिलहाल खरीददारों के लिए एक अच्छा मौका है, लेकिन बाजार की स्थिति बहुत स्थिर नहीं है। अंतरराष्ट्रीय हालात, डॉलर की मजबूती और घरेलू मांग आने वाले दिनों में दामों को ऊपर भी ले जा सकती है और नीचे भी।





# पाकिस्तान में संविधान पर भारी उलटफेर

## 48 अनुच्छेदों का एक झटके में बदलाव, मुनीर को तीनों सेनाओं की कमान

**संसद में धुंध आधार बहस के बाद बिल पास:  
27वां संशोधन बना इतिहास का हिस्सा**

पाकिस्तान की संसद में हाल ही में एक ऐसा बिल पास हुआ है जो देश के संविधान को जड़ से हिला देने वाला है। 12 नवंबर 2025 को नेशनल असेंबली में 234 वोटों से और सीनेट में 64-0 से मंजूर हुआ यह 27वां संशोधन बिल कुल 48 संवैधानिक अनुच्छेदों में बदलाव लाता है। यह बदलाव इतने बड़े पैमाने पर हैं कि इसे पाकिस्तान की राजनीति में एक नया मोड़ माना जा रहा है। सरकार की तरफ से इसे सैन्य व्यवस्था को मजबूत बनाने और न्यायिक बोझ कम करने का कदम बताया गया है, लेकिन विपक्ष इसे लोकतंत्र पर हमला करार दे रहा है। प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ की अगुवाई वाली गठबंधन सरकार ने इसे ऐतिहासिक उपलब्धि कहा, जबकि पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान की पार्टी पीटीआई ने इसे पूरी तरह खारिज कर दिया। बिल पास होने से पहले संसद में जमकर बहस हुई, जहां सत्ताधारी सदस्यों ने तर्क दिया कि बदलते युद्ध के हालात में सेना को एक मजबूत नेतृत्व की जरूरत है। मई में भारत के साथ हुई झड़प के बाद सेना प्रमुख आसिम मुनीर को फील्ड मार्शल रैंक दी गई थी, और अब यह संशोधन उन्हें और ऊंचा उठा रहा है। कुल मिलाकर, यह बिल न सिर्फ सैन्य कमान को बदलता है बल्कि न्यायपालिका की स्वतंत्रता पर भी सवाल खड़े करता है। विशेषज्ञों का कहना है कि इतने सारे अनुच्छेदों में एक साथ बदलाव दुर्लभ है और इससे सत्ता का संतुलन बिगड़ सकता है। सरकार ने दावा किया कि यह सुधार देश की सुरक्षा को मजबूत करेंगे, लेकिन आलोचक इसे सैन्य तानाशाही की ओर कदम बता रहे हैं। इस बदलाव से पाकिस्तान की राजनीति में नई बहस छिड़ गई है, जहां आम लोग सोशल मीडिया पर अपनी राय दे रहे हैं। कुल 48 अनुच्छेद प्रभावित होने से संविधान की मूल संरचना पर बहस तेज हो गई है। यह घटना पाकिस्तान के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ है, जो भविष्य की दिशा तय कर सकती है।

**आसिम मुनीर की कुर्सी पर सोने का ताज:  
तीनों सेनाओं की कमान हाथों में**

आर्मी चीफ आसिम मुनीर अब पाकिस्तान की तीनों सेनाओं - आर्मी, नेवी और एयर फोर्स - के सर्वोच्च कमांडर बन चुके हैं। इस 27वें संशोधन के तहत नया पद 'चीफ ऑफ डिफेंस फोर्सेस' (सीडीएफ) बनाया गया है, जिस पर मुनीर को तुरंत नियुक्ति मिल गई। वे देश के पहले फील्ड मार्शल हैं और अब यह रैंक जीवन भर बरकरार रहेगी। संशोधन के अनुसार, अनुच्छेद 243 में बदलाव से मुनीर को सभी सैन्य शाखाओं पर सीधा नियंत्रण मिला है, जो पहले सिर्फ आर्मी तक सीमित था। इसके अलावा, उन्हें और राष्ट्रपति को आजीवन कानूनी छूट दी गई है, यानी कोई भी मुकदमा या जांच उनके खिलाफ नहीं चल सकती। कानून मंत्री आजम नजर ने संसद में कहा, "वे पूरे राष्ट्र के हीरो हैं, इसलिए उन्हें यह सुरक्षा मिलनी चाहिए।" यह बदलाव मुनीर की उम्र 57 साल होने के बावजूद उन्हें लंबे समय तक सत्ता में रख सकता है। समर्थकों का तर्क है कि मई की भारत-पाक झड़प के बाद सेना को एकीकृत कमान की जरूरत थी,



ताकि फैसले तेजी से लिए जा सकें। मुनीर ने हाल ही में अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप से मुलाकात की थी, जो उनके अंतरराष्ट्रीय प्रभाव को दिखाता है। लेकिन आलोचक कहते हैं कि यह बदलाव सिविलियन कंट्रोल को कमजोर करता है और सेना को राजनीति में और गहरा घुसपैठ देता है। पाकिस्तान की हाइब्रिड सिविल-मिलिट्री व्यवस्था में यह कदम सेना की भूमिका को और मजबूत बनाता है। आम जनता के लिए इसका मतलब है कि सुरक्षा नीतियां अब एक व्यक्ति के हाथ में होंगी, जो चिंता का विषय है। कुल मिलाकर, मुनीर का यह नया रोल पाकिस्तान की सैन्य परंपरा को नया रूप दे रहा है, लेकिन लोकतांत्रिक मूल्यों पर सवाल उठा रहा है।

**विपक्ष की आग बबूला: बिल की कॉपियां  
फाड़ें, संसद में हंगामा मचा**

विपक्षी दलों ने इस संशोधन बिल को पास होते ही संसद में तूफान मचा दिया। पीकेएमएपी के महमूद खान अचकजई ने नेशनल असेंबली में बिल की कॉपी फाड़कर फेंक दी, जबकि पीटीआई के सदस्यों ने वोटिंग का बहिष्कार कर दिया। पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान, जो अभी भी भ्रष्टाचार के आरोप में जेल में हैं, की पार्टी ने इसे "लोकतंत्र का कत्ल" बताया। टेहरीक-ए-तहफुज-ए-आइन-ए-पाकिस्तान (टीटीएपी) नामक गठबंधन ने सरकार पर संविधान की जड़ें हिलाने का आरोप लगाया।

सिर्फ 4 वोटों से विरोध हुआ, लेकिन विपक्ष का कहना है कि सत्ताधारी गठबंधन ने दबाव डालकर बहुमत जुटाया। अचकजई ने कहा, "यह बिल संविधान का अपमान है, हम इसे कभी स्वीकार नहीं करेंगे।" सड़कों पर भी विरोध प्रदर्शन शुरू हो गए हैं, जहां वकील और सिविल सोसाइटी के लोग शामिल हैं। पीटीआई चेयरमैन गोहर अली खान ने इसे "बाकू संशोधन" नाम दिया, जो तानाशाही की याद दिलाता है। विपक्ष का दावा है कि बिल पर कोई सच्ची बहस नहीं हुई और न्यायपालिका या सिविल सोसाइटी से राय नहीं ली गई। जेल में रहते हुए इमरान खान ने अपने समर्थकों से अपील की कि वे शांतिपूर्ण विरोध करें। यह हंगामा पाकिस्तान की राजनीति को और ध्रुवीकृत कर रहा है, जहां सत्ता और विपक्ष के बीच खाई गहरी हो रही है। समर्थक कहते हैं कि विपक्ष सिर्फ नकारात्मक राजनीति कर रहा है, लेकिन आलोचक इसे अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का संकेत मानते हैं। कुल मिलाकर, कॉपियां फाड़ना विपक्ष की नाराजगी का प्रतीक बन गया है, जो आने वाले दिनों में और तनाव पैदा कर सकता है।

**न्यायपालिका की कमर टूटने का खतरा:  
सुप्रीम कोर्ट पर नई जंजीरें**

इस संशोधन का सबसे विवादास्पद हिस्सा न्यायपालिका पर असर डालने वाला है। नया फेडरल कांस्टीट्यूशनल कोर्ट (एफसीसी) बनाया गया है, जो

सुप्रीम कोर्ट से ऊपर होगा और संवैधानिक मामलों को संभालेगा। इसके जजों का चयन एग्जीक्यूटिव यानी सरकार द्वारा होगा, जो आलोचकों को चिंतित कर रहा है। सुप्रीम कोर्ट अब सिर्फ सिविल और क्रिमिनल केसों तक सीमित हो जाएगा।

हाई कोर्ट के जजों को प्रांतों के बीच ट्रांसफर के लिए राष्ट्रपति की मंजूरी जरूरी होगी, और अगर वे इनकार करें तो इस्तीफा देना पड़ेगा। संवैधानिक वकील सलाहुद्दीन अहमद ने कहा, "यह नए कोर्ट के जज सरकार के फैसलों को रबर स्टैप करेंगे।" विशेषज्ञ साद रसूल का मानना है कि इससे स्वतंत्र न्यायपालिका का पतन हो जाएगा। सरकार का तर्क है कि इससे कोर्ट का बोझ कम होगा और फैसले तेज आएंगे, लेकिन विपक्ष इसे न्याय की हत्या बता रहा है। अनुच्छेद 248 में बदलाव से फील्ड मार्शल और राष्ट्रपति को कानूनी सुरक्षा मिली है, जो पहले नहीं थी। यह बदलाव 48 अनुच्छेदों में से कई को छूता है, जो न्यायिक संतुलन बिगाड़ सकता है।

आम लोगों के लिए इसका मतलब है कि अगर कोई बड़ा मामला हो तो फैसला सरकार के हित में हो सकता है। इतिहास में पाकिस्तान ने कई बार न्यायपालिका को कमजोर किया है, और यह कदम उसी दिशा में लगता है। समर्थक कहते हैं कि यह आधुनिकीकरण है, लेकिन आलोचक इसे सत्ता के दुरुपयोग का डर जता रहे हैं। कुल मिलाकर, न्यायपालिका पर यह सेंध देश की लोकतांत्रिक नींव को कमजोर कर सकती है।

**आगे की राह में अनिश्चितता: क्या बनेगा  
पाकिस्तान का भविष्य?**

यह संशोधन पाकिस्तान के भविष्य को नया रंग दे सकता है, लेकिन कई सवाल खड़े कर रहा है। विशेषज्ञों का कहना है कि सेना की बढ़ती भूमिका से सिविलियन सरकार कमजोर हो जाएगी, जो 2008 से चली आ रही नाजुक लोकतंत्र के लिए खतरा है। एक तरफ, समर्थक इसे सुरक्षा मजबूत करने का कदम मानते हैं, खासकर अफगानिस्तान और भारत से तनाव के बीच। दूसरी तरफ, आलोचक जैसे अकील शाह कहते हैं कि यह सैन्य शासन की ओर धकेल रहा है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अमेरिका और अन्य देश चुप हैं, लेकिन मानवाधिकार संगठन चिंता जता रहे हैं। आम पाकिस्तानी, जो आर्थिक संकट से जूझ रहे हैं, सोच रहे हैं कि यह बदलाव उनकी जिंदगी कैसे बदलेगा। अगर मुनीर का रोल मजबूत हुआ तो नीतियां तेज होंगी, लेकिन जवाबदेही कम हो सकती है। विपक्ष के विरोध से राजनीतिक अस्थिरता बढ़ सकती है, और सड़क प्रदर्शन तेज हो सकते हैं। सरकार को अब राष्ट्रपति आसिफ अली जरदारी से हस्ताक्षर कराने हैं, जो औपचारिकता लगता है। कुल 48 अनुच्छेदों का बदलाव इतिहास में कम ही देखा गया है, जो संविधान की अखंडता पर सवाल उठाता है। क्या यह सुधार कामयाब होगा या नया संकट पैदा करेगा, यह समय बताएगा। लेकिन एक बात साफ है कि पाकिस्तान की राजनीति अब और जटिल हो गई है, जहां सेना का दबदबा और साफ दिख रहा है। आम आदमी को उम्मीद है कि इससे शांति और समृद्धि आए, न कि तनाव। यह घटना न सिर्फ पाकिस्तान बल्कि पूरे क्षेत्र के लिए सोचने लायक है।



# चीन की गिरफ्त से आजाद जापान: दुर्लभ मिट्टी की नई जंग

## 2010 का झटका: जब रुक गई दुर्लभ मिट्टी की सप्लाई

**जा**पान की अर्थव्यवस्था को 2010 में एक बड़ा धक्का लगा था, जब चीन ने दुर्लभ मिट्टी के निर्यात पर अचानक रोक लगा दी। ये दुर्लभ मिट्टी, या रेयर अर्थ एलिमेंट्स, वो खनिज हैं जो इलेक्ट्रिक मोटर, बैटरी और हाई-टेक गैजेट्स में इस्तेमाल होते हैं। उस वक्त जापान अपनी 90 प्रतिशत से ज्यादा जरूरत चीन से पूरी कर रहा था। सब कुछ तब शुरू हुआ जब सेनकाकु द्वीपों के पास एक चीनी मछली पकड़ने वाली नाव जापानी कोस्ट गार्ड से टकराई। नाव के कप्तान को गिरफ्तार करने पर चीन ने गुस्से में निर्यात बंद कर दिया। नतीजा? दुर्लभ मिट्टी की कीमतें एक साल में 10 गुना बढ़ गईं। जापान के ऑटोमोबाइल उद्योग को भारी नुकसान हुआ, क्योंकि कारों में लगने वाले मैग्नेट्स इन्हीं पर निर्भर थे। ये संकट सिर्फ आर्थिक नहीं था, बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा का सवाल भी बन गया। जापान को एहसास हो गया कि एक देश पर इतनी निर्भरता कितनी खतरनाक हो सकती है। सरकार ने तुरंत कदम उठाए। अक्टूबर 2010 में 100 बिलियन येन का अतिरिक्त बजट पास किया गया, जो आज के हिसाब से 1.1 बिलियन डॉलर के बराबर था। इस पैसे से सप्लाई चेन को मजबूत करने की योजना बनी। जापान ने सोचा कि अब सिर्फ चीन पर भरोसा नहीं चलेगा। उन्होंने स्टॉकपाइलिंग शुरू की, यानी बड़े भंडार बनाए। साथ ही, वैकल्पिक स्रोत ढूंढने की कोशिश की। ये घटना जापान के लिए सबक थी कि वैश्विक व्यापार में छिपे जोखिम कैसे उभर आते हैं। आज भी वो दिन याद किया जाता है, जब एक छोटी सी घटना ने पूरी इंडस्ट्री को हिला दिया। लेकिन इसी संकट ने जापान को मजबूत बनने का मौका दिया। उन्होंने न सिर्फ तत्काल राहत की, बल्कि लंबे समय की रणनीति बनाई। ये कहानी बताती है कि निर्भरता कैसे कमजोरी बन जाती है, और स्वावलंबन कैसे ताकत। जापान ने सीखा कि तकनीक और साझेदारी से बड़े संकटों का सामना किया जा सकता है।

### विविधीकरण की राह: दूसरे देशों से नई साझेदारियां

संकट के बाद जापान ने अपनी रणनीति में बड़ा बदलाव किया। उन्होंने दुर्लभ मिट्टी के स्रोतों को फैलाने पर जोर दिया, ताकि चीन पर निर्भरता कम हो। सबसे बड़ा कदम था ऑस्ट्रेलिया की कंपनी लायनास रेयर अर्थ्स के साथ पार्टनरशिप। लायनास दुनिया की सबसे बड़ी प्रोड्यूसर है जो चीन के बाहर काम करती है। जापानी कंपनियां जैसे सोजित्सु और जोगमेक ने इसमें निवेश किया। उन्होंने मलेशिया में प्रोसेसिंग प्लांट्स लगाए, जहां कच्चे माल को शुद्ध किया जाता है। इसके अलावा, वियतनाम, म्यांमार और अफ्रीकी देशों में माइनिंग प्रोजेक्ट्स में पैसा लगाया। जोगमेक जैसी सरकारी एजेंसी ने जॉइंट वेंचर्स बनाए, जो कई महाद्वीपों पर फैले हैं। ये सब 2010 के बाद की मेहनत का नतीजा है। जापान ने स्टॉकपाइलिंग को भी स्मार्ट बनाया। पहले कंपनियां खुद भंडार बनाती थीं, जिससे कीमतें बढ़ जाती थीं, लेकिन अब सरकार कंट्रोल करती है ताकि मार्केट बिगड़े नहीं। 2025 में ये रणनीति और मजबूत हुई, जब चीन ने फिर से एक्सपोर्ट कंट्रोल लगाए। लेकिन जापान पहले से तैयार



था। अमेरिका के साथ नया डील हुआ, जिसमें दुर्लभ मिट्टी की सप्लाई चेन को सुरक्षित करने पर सहमति बनी। दक्षिण-पूर्व एशिया के देशों से भी डील की गई। ट्रंप प्रशासन के तहत ये समझौते हुए, जो 2026 तक चलेंगे। चीन ने अप्रैल 2025 में सात दुर्लभ मिट्टियों पर पाबंदी लगाई थी, लेकिन नवंबर में कुछ कंट्रोल को सस्पेंड कर दिया। फिर भी, जापान ने अपनी विविधीकरण को नहीं रोका। उन्होंने घरेलू कंपनियों को फाइनेंशियल हेल्प दी, ताकि माइनिंग और रिफाइनिंग में निवेश हो। ये कदम बताते हैं कि जापान सिर्फ प्रतिक्रिया नहीं दे रहा, बल्कि आगे की सोच रहा है। विविधीकरण से न सिर्फ जोखिम कम हुआ, बल्कि नई दोस्तियां भी बनीं। लेकिन सवाल ये है कि क्या ये काफी है? जापान की ये यात्रा दिखाती है कि स्मार्ट साझेदारियां कैसे संकटों को अवसर में बदल देती हैं।

### सामग्री विज्ञान का कमाल: रीसाइक्लिंग और वैकल्पिक तरीके

जापान ने सिर्फ स्रोत बदलने पर नहीं रुका, बल्कि सामग्री विज्ञान में भी क्रांति लाई। उन्होंने रीसाइक्लिंग को बड़ा हथियार बनाया, ताकि पुरानी चीजों से नया निकाला जा सके। क्योटो यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिकों ने SEEE प्रोसेस विकसित किया, जो यूज्ड मैग्नेट्स से दुर्लभ मिट्टी निकालता है। ये तीन स्टेज का तरीका है: पहले मोल्टन साल्ट में मैग्नेट स्क्रेप्स डालते हैं, जहां कैल्शियम क्लोराइड और मैग्नेशियम क्लोराइड से नौडिमियम और डिस्प्रोसियम अलग हो जाते हैं। फिर इवेपोरेशन से बायप्रोडक्ट्स हटाए जाते हैं, और आखिर में इलेक्ट्रोलिसिस से शुद्ध मेटल्स निकलते हैं। नतीजा? 96 प्रतिशत नौडिमियम और 91 प्रतिशत डिस्प्रोसियम रिकवर होता है, वो भी 90 प्रतिशत से ज्यादा प्योरिटी के साथ।

ये पुराने माइनिंग या केमिकल रीसाइक्लिंग से बेहतर है, क्योंकि पर्यावरण को कम नुकसान होता है और एनर्जी कम लगती है। 2025 में ये तकनीक इलेक्ट्रिक व्हीकल्स और विंड टर्बाइन्स के लिए गेम-चेंजर बनी। जापान का दुर्लभ मिट्टी का इस्तेमाल 2010 के मुकाबले आधा से कम हो गया है। वैकल्पिक सामग्रियों पर भी रिसर्च तेज है। AI की मदद से रेयर-अर्थ-फ्री मैग्नेट्स बनाए गए, जो इलेक्ट्रिक मोटर्स के लिए परफेक्ट हैं। ये सिर्फ तीन महीने में तैयार हो गए। ऑटोमोबाइल और विंड एनर्जी सेक्टर में रेयर अर्थ मैग्नेट्स का यूज कम किया गया। सरकार ने रिसर्च ग्रांट्स दिए, ताकि हाइड्रोजन टेक्नोलॉजी जैसे नए एरिया में वैकल्पिक मटेरियल्स आए। डीप-सी माइनिंग भी एक बड़ा स्टेप है। मिनामितीरी आइलैंड के पास पैसिफिक ओशन में 16 मिलियन टन रेयर अर्थ ऑक्साइड्स के रिजर्व हैं। 2026 में टेस्टिंग शुरू होगी, 2027 में ऑप्टिमाइजेशन, और 2033 तक कमर्शियल प्रोडक्शन। इसके लिए 300 बिलियन येन का बजट है। ये घरेलू संसाधन चीन पर निर्भरता घटाएंगे। जापान की ये इनोवेशंस दिखाती हैं कि विज्ञान कैसे सप्लाई चेन को मजबूत बनाता है। लेकिन लागत और स्केल-अप की चुनौतियां बाकी हैं। फिर भी, ये कदम उम्मीद जगाते हैं कि तकनीक से स्वावलंबन संभव है।

### आज की स्थिति: 60 प्रतिशत से नीचे, लेकिन लक्ष्य अभी दूर

2025 के अंत तक आते-आते जापान ने अपनी दुर्लभ मिट्टी पर चीन की निर्भरता 60 प्रतिशत से नीचे ला दी है। 2010 के 90 प्रतिशत से ये बड़ी छलांग है। लंदन की आर्ग्स मीडिया के डेटा से पता चलता है कि ये कमी रीसाइक्लिंग, विविधीकरण और इनोवेशंस की वजह से

हुई। जापानी ऑटो इंडस्ट्री के एक्जीक्यूटिव्स का मानना है कि साल के अंत तक ये 50 प्रतिशत से नीचे चली जाएगी। लेकिन क्या जापान सच में आजाद हो गया? आंशिक रूप से हां, क्योंकि अब कोई अचानक एम्बार्गो उन्हें ज्यादा नुकसान नहीं पहुंचा सकता। 2025 में चीन ने एक्सपोर्ट कंट्रोल्स लगाए, लेकिन नवंबर में इन्हें 2026 तक सस्पेंड कर दिया। फिर भी, लायनास जैसी पार्टनरशिप्स ने ब्रेकथ्रू दिए, जैसे चाइना के बाहर हेवी रेयर अर्थ्स का प्रोडक्शन। अमेरिका-जापान डील से सप्लाई चेन और सुरक्षित हुई। लेकिन सच्चाई ये है कि चीन अभी भी दुनिया का 70 प्रतिशत माइनिंग और 90 प्रतिशत प्रोसेसिंग कंट्रोल करता है। जापान को अभी भी कुछ अमाउंट चीन से लेना पड़ता है, खासकर हेवी रेयर अर्थ्स जैसे डिस्प्रोसियम के लिए। एक जापानी ऑटोमेकर के सीनियर ने कहा कि ये "वर्क इन प्रोग्रेस" है। इंसुलेशन तो हो गया, लेकिन पूरी तरह अलगाव नहीं। दूसरे क्रिटिकल मिनरल्स जैसे कोबाल्ट, निकल और लिथियम पर भी निर्भरता बनी हुई है। जापान सरकार घरेलू फर्म्स को फाइनेंशियल सपोर्ट दे रही है, ताकि माइनिंग में निवेश हो। ये स्थिति बताती है कि प्रोग्रेस हुई है, लेकिन रोड अभी लंबा है। जापान की ये कहानी बैलेंस्ड पर्सपेक्टिव देती है – सफलता की, लेकिन सतर्कता की भी। क्या 50 प्रतिशत का लक्ष्य पूरा होगा? समय बताएगा, लेकिन प्रयास जारी हैं।

### बाकी चुनौतियां: क्या छिपी हुई निर्भरता अभी भी बनी हुई?

जापान की यात्रा प्रेरणादायक है, लेकिन पूरी तरह स्वतंत्रता अभी दूर लगती है। भले ही निर्भरता 60 प्रतिशत से नीचे आ गई, लेकिन चीन का ग्लोबल डोमिनंस एक बड़ी चुनौती है। वो न सिर्फ माइनिंग, बल्कि प्रोसेसिंग में भी लीडर है। जापान को हेवी रेयर अर्थ्स के लिए अभी भी चीन की ओर देखना पड़ता है, क्योंकि वैकल्पिक स्रोत अभी पूरी तरह तैयार नहीं। डीप-सी माइनिंग जैसे प्रोजेक्ट्स 2033 तक कमर्शियल होंगे, तब तक गैप भरा जाना बाकी है। रीसाइक्लिंग टेक्नोलॉजीज कमाल की हैं, लेकिन इंडस्ट्रियल स्केल पर लागू करने में समय और पैसा लगेगा। 2030 के दशक तक सर्कुलर इकोनॉमी मजबूत होनी है। दूसरे मिनरल्स पर भी दबाव है – गैलियम, जर्मेनियम, एंटीमनी। चीन के कंट्रोल से इन्हें भी प्रभावित किया। जापान को इंटरनेशनल कोलैबोरेशन बढ़ाना होगा, जैसे यूएस और यूरोप के साथ। ट्रंप एडमिनिस्ट्रेशन के डील से राहत दी, लेकिन ट्रेड वॉर फिर शुरू हो सकती है। जापान की स्ट्रैटेजी प्रैगमैटिक है – चीन से पूरी तरह कटऑफ नहीं, बल्कि बैलेंस्ड एंगेजमेंट। एक सीनियर एक्जीक्यूटिव ने कहा कि मल्टी-ग्रॉन्ड पॉलिसी जरूरी है। भविष्य में क्लाइमेट चेंज और ग्रीन टेक से डिमांड बढ़ेगी, तो सप्लाई चेन को और मजबूत करना पड़ेगा। जापान ये दिखा रहा है कि इनोवेशन और स्मार्ट पॉलिसी से संकटों का सामना किया जा सकता है। लेकिन सवाल बना रहेगा: क्या ये निर्भरता कभी शून्य हो जाएगी? शायद नहीं, लेकिन मैनेजबल जरूर हो सकती है। ये सोचने पर मजबूर करता है कि ग्लोबल इकोनॉमी में एक देश का कंट्रोल कितना खतरनाक है। जापान की कहानी सबके लिए सबक है – आगे बढ़ो, लेकिन सावधान रहो।





**प्रभु कृपा दुख निवारण समागम**



BY

**Arihanta  
Industries**

- BHRINGRAJ
- AMLA
- REETHA
- SHIKAKAI

100 ML

15 ML



**ULTIMATE  
HAIR  
SOLUTION**

**NO**

ARTIFICIAL  
COLOR  
FRAGRANCE  
CHEMICAL

# KESH VARDAK SHAMPOO

The complete solution of all hair problems:

- Prevent hair fall and make hair follicle strong.
- Promote hair growth.
- Free from all artificial & harmful chemicals like., SLS.
- 100% pure ayurvedic shampoo.
- Suitable for all hair types.



**ORDER ONLINE @ :**

**amazon**

**arihanta.in**

**Arihanta Industries**